हितहजारिका

स्वरचित दोहों का संकलन

तेश कुमार शर्मा

गणपति भवन सिविल लाइन, बिजनौर 246701 (उ0प्र0) भारत

हितहजारिका

हितहजारिका

स्वरचित एक हजार दोहों का संकलन

ईश्वर का इस जगत में, कोई नहीं विकल्प।
जग सृष्टा - परमात्मा - सम्प्रभुता - अविकल्प।।

रचयिता

हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाइंस, बिजनौर 246701 (उ0प्र0) भारत
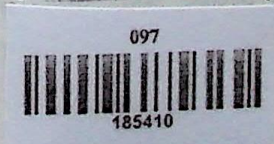
हितहजारिका

2012

प्रथम संस्करण

मूल्य—रु. 200/— मात्र प्रति पुस्तक

रचयिता

हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाईन्स,
बिजनौर 246701 (उ.प्र.)

प्रकाशक

हरिगंगा प्रकाशन गणपति भवन, सिविल लाईन्स,
बिजनौर—246701 (उ.प्र.) भारत

मुद्रक

अग्रवाल ग्राफिक्स, 350 जत्तीवाड़ा, बुढ़ाना गेट, मेरठ

समर्पण

स्व॰ गंगादेई
स्व॰ नारायणी देवी
स्व॰ जनक प्यारी
स्व॰ रामसुमरनी शर्मा

—हितेश कुमार शर्मा
—उषा शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाइंस,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)

मेरी बात

अपने ही बीच के वरिष्ठ कवियों को दोहों की रचना करते और दोहों का गोष्ठियों में वाचन करते हुए देखता रहा और सोचता रहा क्या मैं भी दोहे लिख सकता हूँ। श्री बुद्धि प्रकाश शर्मा की दोहों की पुस्तक पढ़ी। अभिभूत हुआ और आत्मानंद की प्राप्ति हुई और वहीं से प्रेरणा मिली कि दोहे लिखे जाएँ। साहित्य के क्षेत्र में उन नियमों और कायदों से परिचित नहीं हूँ और न ही कभी मात्राओं का, पिंगल का या व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश की। अपनी कही बात को किसी पर थोपता भी नहीं हूँ। अक्सर फोन आते हैं, जिस पर चिरपरिचित आवाज सुनाई पड़ती है कि आपकी गज़ल पत्रिका में पढ़ी, अच्छी लगी, आपको बधाई। सुनकर अच्छा लगता है तथा कुछ नया लिखने की इच्छा होती है। मैं जानता हूँ, मैं मानता हूँ कि इन दोहों में कुछ कमी अवश्य होगी, किसी में मात्रा की, किसी में भाव की, किसी में अर्थ की, किन्तु एक भी दोहा व्यर्थ नहीं लिखा गया है। सीधी सरल भाषा में लिखना मेरा स्वभाव है और उसी भाषा में कविता भी लिखता हूँ, गज़ल भी लिखता हूँ और यह दोहे भी लिखे हैं। अतुकांत कविताएँ, क्षणिकाएँ, हाइकु तथा त्रिपदी आदि बहुत विद्वान लोगों द्वारा लिखी जाती हैं। मैं नहीं लिख सकता और मैं अपनी समझ से इनको कविता भी नहीं मानता।

एक हजार दोहे कैसे लिखे गए, कब-कब लिखे यह मुझे भी पता नहीं, किन्तु लिखे गए और लेखन आपके सामने है। अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराइएगा, मुझे अच्छा लगता है। मैं कभी भी इस बात का बुरा नहीं मानता कि आपने मेरी गज़ल को कम वजन की बताया या मेरी कविता को अर्थहीन बताया। हाँ, यह प्रयास अवश्य करता हूँ कि आपकी प्रतिक्रिया के अनुसार संशोधन कर सकूँ। क्योंकि मेरे मन में जो भाव

आता है उसे मैं कागज पर उतार देता हूँ, बार-बार पढ़कर ये देखने का प्रयास करता हूँ कि लय तो नहीं टूट रही। कभी-कभी कुछ लोगों से सलाह-मशवरा भी करता हूँ। डॉ॰ बलजीत सिंह जी ने मेरे बहुत से दोहे पढ़े हैं और उनमें संशोधन करने की मुझे सलाह दी है। कतिपय दोहे संशोधित भी हुए हैं।

मेरी प्रार्थना स्वीकार करते हुए श्री बुद्धि प्रकाश जी जो स्वयं श्रेष्ठ साहित्यकार हैं, ने मेरे इस दोहा संकलन को पढ़कर उसमें वांछित संशोधन करने की कृपा की। मैं उनका आभारी हूँ। मैं उनका ऋणी हूँ। यदि वह मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं करते तो सम्भवतः यह संकलन प्रकाशित ही नहीं होता। श्री बुद्धि प्रकाश जी की दोहों की दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा एक अन्य पुस्तक प्रकाशन की ओर अग्रसर है। साथ ही आभारी हूँ उन सभी मित्रों का, उन सभी कवियों का, जिन्होंने मेरे दोहों को पढ़ा है और सराहा है। उन अखबारों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे दोहे प्रकाशित किये हैं।

मैं ऋणी हूँ, डॉ॰ सविता मिश्र का जिन्होंने मेरे विनम्र निवेदन को स्वीकार करके मेरे इस दोहों के संकलन की भूमिका लिखी। वह स्वयं एक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं और उन्होंने अपना बहुमूल्य समय लगाकर मेरे दोहे पढ़े और पुस्तिका को भूमिकाबद्ध किया। मैं एक बार पुनः उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरी धर्मपत्नी उषा शर्मा अक्सर मुझे सलाह देती रहती हैं, जिनसे कभी-कभी कुछ दोहों में अधिक स्पष्ट अर्थ उभर आता है। धर्मपत्नी हैं इसलिए उनका आभारी हूँ यह तो नहीं कहूँगा, किन्तु उनके सहयोग के बिना यह यात्रा सम्पन्न होनी सम्भव नहीं थी।

श्री हरिओम ने पूरी पुस्तक कम्प्यूटराइज की है और बड़ा परिश्रम किया है, उनके अनुभव का लाभ मुझे मिला है, जिसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूँ।

यह दोहा संकलन आपके समक्ष है, अपने हिसाब से इसका मूल्यांकन करें और मुझे तथा मेरी लेखनी को अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराएँ। आभारी रहूँगा।

दिनांक : 14.09.2012 —हितेश कुमार शर्मा

हिन्दी दिवस

गुरू कृपा से आज तक, बने सहस्रों काम।
इसीलिए श्री गुरु चरण, मेरा प्रथम प्रणाम।।०००१।।

कृपा करो माँ शारदे, करो कण्ठ में वास।
निज विवेक, बुद्धी सहित, जागे मम विश्वास।।०००२।।

मातु शारदे की करें, प्रथम वन्दना तात।
शब्द-कण्ठ-स्वर की मिले, तभी हमें सौगात।।०००३।।

मातु शारदा का नहीं, कोई और विकल्प।
हंसवाहिनी कृपा से, हो कवि कायाकल्प।।०००४।।

मनवीणा झंकार दे, मन में भरे हिलोर।
वीणापाणी की कृपा, श्रोता करें निहोर।।०००५।।

माँ के चरणों में करें, बारम्बार प्रणाम।
बने श्रेष्ठ कविकुल वही, जो कल था गुमनाम।।०००६।।

लगती तेरी भक्ति में, मुझको कमी हितेश।
मन से पूजे मातु को, पाए कृपा विशेष।।०००७।।

कल तक कर जिसका रहा, था समाज उपहास।
हंसवाहिनी कृपा से, हो गया कालिदास।।०००८।।

मेरी लज्जा राखियो, माँ स्वर की सरताज।
कठिन परीक्षा की घड़ी, आई सन्मुख आज।।०००९।।

सभागार आसीन हैं, माँ कवि श्रेष्ठ महान।
मुझ पर कृपा विशेष हो, मैं सबसे नादान।।००१०।।

कण्ठ नहीं, लय-स्वर नहीं, नहीं छन्द का ज्ञान।
कृपा करें माँ शारदे, दे मुझको पहचान।।००११।।

पिंगल से अनभिज्ञ हूँ, मात्रा से अनजान।
कविता लिखना दे सिखा, माता कृपा निधान।।००१२।।

माँ सरस्वती की कृपा, जिस पर हुई हितेश।
केवल उसने ही लिखे, कविता, छन्द विशेष।।००१३।।

मुझको यह वर दीजिए, पूज्य शारदे मात।
स्याही सूखे ना कभी, कलम चले दिन-रात।।००१४।।

करें शारदे माँ कृपा, धरें शीश पर हाथ।
लिखूँ वहीं जो श्रेष्ठ हो, झुके कहीं ना माथ।।००१५।।

स्वर दो मेरे कण्ठ को, मन में उच्च विचार।
मात शारदे यूँ करो, तुम मुझ पर उपकार।।००१६।।

अपने दुख को भूलकर, पर दुख में दे साथ।
उसका काज सँवारते, स्वयं जगत के नाथ।।००१७।।

मन से मन की बात को, मन में रखना गोय।
बँधती मुट्ठी खुल गई, हँसी उड़ेगी तोय।।००१८।।

शत्रू हो या मित्र हो, बात न कीजे व्यर्थ।
बात-बात में बात से, होते बड़े अनर्थ।।००१९।।

शव बनकर क्यों जी रहा, शिव बन सखे सुजान।
कटुता का विषपान कर, दे अमरित मुस्कान।।००२०।।

जैसा चाहे स्वयं से, कर सबसे व्यवहार।
सबका कर सम्मान तू, जो चाहे सत्कार।।००२१।।

काला धन जितना बढ़ा, बढ़ा हृदय का रोग।
इसी जन्म में भोगने, पड़ते सबको भोग।।००२२।।

बदला है हर कर्म का, हार जीत का खेल।
अपने-अपने कर्म से, मिले राजपद जेल।।००२३।।

जिसको सर पर चढ़ाकर, दी जग की पहचान।
सर पर चढ़कर बोलता, आज वही श्रीमान।।००२४।।

पतिवर्ता मन भावनी, पत्नी मिले सुजान।
छीन सके यमराज से, जो मृत पति के प्राण।।००२५।।

अपना देश विशेष है, देखा सुना हितेश।
पग-पग पर बदले यहाँ, भोजन, पानी, वेश।।००२६।।

राम-राम कह राम कह, राम-राम कह राम।
कलयुग में आधार है, नाम यही सुख धाम।।००२७।।

विद्या वारिध बुद्धि के, दाता सिद्ध गणेश।
पानी है यदि सफलता, पहले सुमर हितेश।।००२८।।

बहन, पुत्रवधु, अनुज वधु है निज सुता समान।
इन्हें स्नेह सम्मान दे, यदि चाहे कल्याण।।००२९।।

भाई से मत बैर कर, मत कर व्यंग्य प्रहार।
अगर विभीषण हो गया, दे उजाड़ घर-बार।।००३०।।

कंचन कारण बन गये, बैरी-सभी हितेश।
कंचन को माटी समझ, मन में रहे न क्लेश।।००३१।।

बैरी से भी मित्रवत् कर हितेश व्यवहार।
द्वेष-भाव से ना चले जीवन का व्यापार।।००३२।।

सास, ननद कातिल बनीं, ससुर बने जल्लाद।
पुंसहीन पति से करे, अबला क्या फरियाद।।००३३।।

रिश्वत भोग विलासिनी, रोग बढ़ावे शोक।
अभी समय है स्वयं को, यह लेने से रोक।।००३४।।

राणा विष भिजवा दिया, मीरा पाया सोय।
शिव के प्रभु बसिहैं जहाँ विष प्रभाव क्या होय।।००३५।।

करने से सत्कर्म के, भाग्य होय बलवान।
दुष्कर्मों से भाग्य का, सुफल होय अवसान।।००३६।।

जब हितेश हो दाँव पर, मान, प्राण, सम्मान।
तब साहस और धैर्य से, उसका ढूँढ निदान ।।००३७।।

पद पाकर बौरा गया, भूल गया कर्त्तव्य।
ऐ हितेश उस व्यक्ति को, मिले नहीं गंतव्य।।००३८।।

नीचे कुल की लाड़ली दुल्हन बनकर आय।
कलह करै पति सास से, चूल्हा अलग धराय।।००३९।।

पुस्तक से बढ़कर नहीं, कोई मित्र हितेश।
विद्वानों के सामने, झुकते सदा नरेश।।००४०।।

जैसे नरसी का भरा, कृष्ण सखा ने भात।
ऐसे ही फिर जायेंगे, तेरे भी दिन-रात।।००४१।।

भाग्य भरोसे बैठकर, भूखा मरे कुम्हार।
किन्तु चाक चलता रहे, सुखी रहे परिवार।।००४२।।

सुबह-सुबह कित को गये, खेले कहाँ गुलाल।
पति से पूछे भामिनी, किसको किया निहाल।।००४३।।

हिन्दी हिन्दुस्तान में, सबकी भाषा मित्र।
हिन्दी को अपना रहे, अँग्रेजी चलचित्र।।००४४।।

अँग्रेजी में दे रहे, निर्णय न्यायाधीश।
इससे बड़ा न देश का, है अपमान, महीश!।।००४५।।

अँग्रेजी इस देश से, हटे करो वह काज।
क्रांति वही फिर चाहिए, जिससे मिला सुराज।।००४६।।

यदि चाहे सम्मान तू, सबका कर सम्मान।
जो देगा वह मिलेगा, अनुभव करके जान।।००४७।।

कुछ भी अगर न दे सके, दे मीठे दो बोल।
शत्रू पर भी जय मिले, बिना युद्ध बिन मोल।।००४८।।

इकला-इकला चल रहा, भटकेगा निज राह।
प्रभू नाम का साथ रख, लक्ष्य प्राप्त हो वाह।।००४९।।

लूटा दोनों हाथ से, कर-कर लम्बे हाथ।
लेकिन जब पंछी उड़ा, गया न कुछ भी साथ।।००५०।।

विश्व विजय जिसने करी, जीते देश-विदेश।
जग से खाली हाथ ही, फिर भी गया हितेश।।००५१।।

ऊँचें-ऊँचे महल थे, जिसके अगणित भृत्य।
आज कब्र में कर रहे, उनकी कीड़े नृत्य।।००५२।।

परहित की जो सोचते, निज हित उनका होय।
पर धन, पर दारा लखे, वह अपना सब खोय।।००५३।।

जानो मिलन वियोग का है पक्का अनुबन्ध।
वह योगी है, जो करे दोनों में सम-बन्ध।।००५४।।

प्रेम प्रभू का द्वार है, क्रोध पाप का मूल।
मन से मित्र उखाड़ दे, घृणा, द्वेष का शूल।।००५५।।

क्षमादान करता सदा, मन में सुख-संचार।
हितकर होता सर्वदा, सबसे सद्व्यवहार।।००५६।।

बैर भाव से कब मिली, किसको विजय हितेश।
पीढ़ी दर पीढ़ी चले, यह ऐसा है क्लेश।।००५७।।

जल छाया दोनों मिले, ऐसे रोपो वृक्ष।
काँटें बोकर पा सका, कौन यहाँ पर लक्ष।।००५८।।

सपने हों आकाश से, मन में उच्च विचार।
जीवन लक्ष्य विहीन हो, तो जीवन बेकार।।००५९।।

दुर्गुण से दुर्भाग का, आना निश्चित जान।
सद्गुण से सद्गुरु मिलें, प्रभु की हो पहचान।।००६०।।

आतमा से परमात्मा, कभी नहीं है दूर।
इसे नहीं पहचानता, अहंकार में चूर।।००६१।।

जनप्रतिनिधि सब बन गये, धन स्वामी महिराज।
आज़ादी के बाद यह, हुई कोढ़ में खाज।।००६२।।

सौंपा भ्रष्टाचारियों, को हमने ही देश।
कैसे सुधरे भूल यह, कुछ तो कहो हितेश।।००६३।।

नौकरशाही कर रही आज देश पर राज।
घोटालों में व्यस्त हैं, मंत्री जी महाराज।।००६४।।

सोना परिवर्तित हुआ, काले धन में मित्र।
नेताओं का देश के, बदला आज चरित्र।।००६५।।

रुक मत चलता चल सखे जब तक मन में आन।
कल क्या होगा, क्या पता कौन सका है जान।।००६६।।

इस जग में गुरु द्रोह सा, पाप बड़ा नहिं कोय।
सकल पुण्य का नाश हो, द्रोही कोढ़ी होय।।००६७।।

चादर से जब जब कभी, फैले बाहर पाँव।
राजपाट वैभव गया, बिकी सम्पदा गाँव।।००६८।।

इस उस का धन देखकर, मत टपकावे लार।
क्यों मनुष्य बनकर करे, कुत्ते सा व्यवहार।।००६९।।

जो शत्रू से मिल गया, उसे मित्र मत मान।
विष में मिलकर शहद भी, खो देता पहचान।।००७०।।

सारा जीवन कट गया, माँ ममता की छाँव।
जब से मैया ना रही, सूना लागे गाँव।।००७१।।

उत्तर प्रत्युत्तर हुए, पैदा हुई खटास।
फिर विकल्प कुछ ना रहा, जब टूटा विश्वास।।००७२।।

एक-एक दिन घट रहा, कुछ जागे कुछ सोय।
उम्र घट रही या बढ़ी, इसे न समझा कोय।।००७३।।

जिसने बाँटी विश्व को, जलवायू औ' धूप।
उसको भज जिसने दिया, तुझको रूप अनूप।।००७४।।

सूर्पणखा-सी वासना, घूमे नाक कटाय।
जो इसके वश में हुआ, वह नकटा कहलाय।।००७५।।

मात-पिता को तब हुआ, असह असीमित सोग।
कहा पुत्र ने जब उन्हें, मिलने वाले लोग।।००७६।।

रानी झाँसी, शिवाजी या राणा श्रीमान।
सिंहासन बैठें अगर, चमके हिन्दुस्तान।।००७७।।

यह अभाग है देश का, कठपुतलों का राज।
इसीलिए हर क्षेत्र में, घोटाले हैं आज।।००७८।।

चौदह वर्षों तक किया, सरयू तट पर वास।
वो सब किन्नर हो रहे, आज देश में खास।।००७९।।

पति से बोले वचन कटु, मन में अहम् बसाय।
कलहप्रिया उस नार से, ईश्वर सदा बचाय।।००८०।।

श्रीनाथद्वारा गये, दर्शन हुए अनन्य।
पत्नी का सहयोग था, देवपुरा सौजन्य।।००८१।।

हँसते-हँसते भगत सिंह, राजगुरू, अशफ़ाक।
हुए निछावर देश पर, ऊँची राखी नाक।।००८२।।

पत्नी से पति का छुटा, पति से पत्नी हाथ।
लहर सुनामी ले गई, सबकुछ अपने साथ।।००८३।।

दया भाव रख चित्त में, यदि तू चाहे चैन।
निर्दय रहता है सखे, जीवन भर बेचैन।।००८४।।

माँ ईश्वर का रूप है, ममता स्नेह अपार।
माँ छाया, माँ धूप है, समय काल अनुसार।।००८५।।

हार-जीत है खेल में, समय सुअवसर हाथ।
रणकौशल क्या कर सके, भाग्य न हो यदि साथ।।००८६।।

पति की प्रिय मन भावनी, पत्नी हो यदि साथ।
जीवन के हर क्षेत्र में, विजय तिलक हो माथ।।००८७।।

मात-पिता आशीष से, मिट जाते हैं क्लेश।
इन दोनों की छाँव में, सुख हैं सभी हितेश।।००८८।।

जो माया के वश हुए, लोभ-मोह-मद ग्रस्त।
रावण जैसा वे करें, सारे कुल का अस्त।।००८९।।

राधा-राधा जो भजे, उसे मिलें घनश्याम।
बिन राधा की कृपा के, मिलें न राधेश्याम।।००९०।।

मैं औ' मय दोनों बुरी, त्याग इन्हें श्रीमान।
जिसमें यह दोनों नहीं, वह सच्चा इन्सान।।००९१।।

मय औ' मैं जिसमें नहीं, उसका सब संसार।
जिसमें दोनों व्याप्त हैं, उसे मिले धिक्कार।।००९२।।

मैं औ' मय के नशे में जो रहता है चूर।
वह रहता है सर्वदा अपनों से भी दूर।।००९३।।

मय के चक्कर में फँसा, खोया बुद्धि-विवेक।
जिसके मन में मैं बसी, उसके शत्रु अनेक।।००९४।।

ईश्वर का संसार में कोई नहीं विकल्प।
वही नहीं यह जानते जिनमें बुद्धी अल्प।।००९५।।

कभी धूप अच्छी लगे, कभी सुहाती छाँव।
उत्तम है अति स्वर्ग से, अपना ही घर गाँव।।००९६।।

सुरा सुन्दरी देखकर, जिसका मन चल जाय।
वह दल-दल ऐसा फँसे, बाहर निकल न पाय।।००९७।।

अफसर को पहचानकर कहा उसे श्रीमान।
मात-पिता से बन गया वही पुत्र अनजान।।००९८।।

पत्नी के व्यवहार से दुःखी हुआ पति नेक।
उस पत्नी का क्या करे जिसके मित्र अनेक।।००९९।।

घूम रहा विक्षिप्त-सा, कल का बुद्धीमान।
जब पत्नी के पूर्णतः, गया चरित को जान।।०१००।।

पुरुष भाग्य नारी चरित कौन सका है जान।
यह दोनों अनुकूल हों, तब होता कल्याण।।०१०१।।

पत्नी के व्यवहार से दुखी हुआ विद्वान।
तोड़ लिये सम्बन्ध सब, जब ना हुआ निदान।।०१०२।।

भौतिकवादी दौड़ है, आँधी कहे हितेश।
भंग सभी सुख-शांति हो, कभी-कभी हो क्लेश।।०१०३।।

सीधी-साधी बात में मतलब उलट न देख।
बिगड़ गया यदि संतुलन, खिंच जायेगी रेख।।०१०४।।

जो प्रयास करते नहीं, उनमें नहीं उछाह।
भागीरथी प्रयास से, गंगा मिला प्रवाह।।०१०५।।

जिनकी आँखों में नही हया शर्म या लाज।
उनको साथ न राखिये, भले मिले ना ताज।।०१०६।।

ताजमहल बनवाय कर, अमर हुआ सुल्तान।
अमिट प्रेम की है यही भारत में पहचान।।०१०७।।

पुत्र नसीहत ना सुने, उल्टे दे उपदेश।
शिक्षाओं में रह गई, शायद कमी हितेश।।०१०८।।

पुत्र अवज्ञा जब करे, पत्नी स्वेच्छाचार।
ऐसे मानव के लिए, जीवन है बेकार।।०१०९।।

अविवाहित जब भी रहें, कुछ दिन तक तो साथ।
किन्तु अलग जिस दिन हुए, बच्चे हुए अनाथ।।०११०।।

कपट वासना को कहे, शुद्ध आत्मिक प्यार।
अविवाहित सम्बन्ध है, सुन हितेश व्यभिचार।।०१११।।

तन आतमा संग शेष है, यात्रा तब अवशेष।
मृत्यू एक पड़ाव है, संशय करें न लेश।।०११२।।

मात-पिता को पूजिये, ईश्वर जैसा मान।
मात-पिता साक्षात है, ईश्वर केवल ज्ञान।।०११३।।

जिनके पीछे पुलिस ने, नित्य रखी भग-दौड़।
उन्हें अंग रक्षक मिले, कैसा आया मोड़।।०११४।।

मुनुवा डाकू बन गया, सांसद सत्तासीन।
कत्ल डकैती के हुए, मुद्दे तेरह तीन।।०११५।।

भाँग, धतूरा या सुरा, इनका करो न पान।
इनके सेवन से मिटे, ज्ञान-मान-सम्मान।।०११६।।

कौड़ी मत ला दूर की, लिख दे सीधी बात।
ऐसा लिख जो समझ ले, पढ़ने वाला तात।।०११७।।

सब प्रकार हो तृप्त तो, पतीव्रता बन जाय।
पत्नी अगर अतृप्त हो, संतन आश्रम जाय।।०११८।।

हास और परिहास में, संयम इतना राख।
जैसे जलती आग को, करे नियन्त्रित राख।।०११९।।

जीवन जब निश्चित हुआ, हुई सुनिश्चित मौत।
संग दोउ नहिं रह सके– इक दूजे की सौत।।०१२०।।

जीवन जीते ना दिया, स्नेह और सन्मान।
मर जाने पर कर रहे, सब उसका गुणगान।।०१२१।।

हिन्दी में हर शब्द का, सिर्फ अर्थ है एक।
इगलिश के हर शब्द में, होते अर्थ अनेक।।०१२२।।

उत्सव आयोजन हुए, मरने के उपरांत।
आयोजन उत्सवरहित, जीवन गया नितांत।।०१२३।।

कण–कण में प्रभु रम रहे, धरा व्योम के बीच।
छिपा न उनसे कुछ रहे, कर्म करे मत नीच।।०१२४।।

अँग्रेजी परतंत्रता– की है मित्र प्रतीक।
हिन्दी इक वरदान है, परभाषा है भीख।।०१२५।।

सकल विश्व में भारती– भाषा श्रेष्ठ महान।
हो वसुधैव कुटुम्बकम्, ऐसा बने विधान।।०१२६।।

कहीं शून्य में खो गईं, यादें अपनी मित्र।
धुँधले-धुँधले पड़ गये, सभी विगत के चित्र।।०१२७।।

श्वेत केश जबसे हुए, मिला बहुत सम्मान।
दुखी हुआ मन जब मिली, बाबा सी पहचान।।०१२८।।

त्याग सके तो त्याग दे, ईर्ष्या, तृष्णा, द्वेष।
पाये तभी समाज में, तू सम्मान विशेष।।०१२९।।

खोया सभी विवेक तब, मन में उपजा क्रोध।
गलत सही का क्रोध में, होता कभी न बोध।।०१३०।।

फल मिलता है सर्वदा, कर्मों के अनुकूल।
दुष्कर्मों के वृक्ष पर, उगते सदा बबूल।।०१३१।।

सत्कर्मों से बाग में, उगते आम, अनार।
मीठा फल देता सदा, अपना सद्व्यवहार।।०१३२।।

बैरी से हो मित्रता, ऐसा करना यत्न।
पर कायर बनकर कभी, करना नहीं प्रयत्न।।०१३३।।

टाल सके तो टाल दे, युद्ध, शत्रुता, रार।
पर जब सर पर आ पड़े, कर में ले तलवार।।०१३४।।

कन्या कुल की लाज है, यह सहेज कर राख।
या तो मुख उज्ज्वल करे, या मल देवे राख।।०१३५।।

यद न भ्रूणहत्या रुकी, इस पर साधा मौन।
फिर भाई के हाथ में, राखी बाँधे कौन।।०१३६।।

कन्यादान महान है, इससे बड़ा न दान।
सम्बन्धों के बीच में, कन्या सेतु समान।।०१३७।।

कुल मर्यादा कुण्डली, सब पर करें विचार।
बेटी रोटी का करें, जाँच-परख व्यवहार।।०१३८।।

जिस आँगन में गूँजती, कन्या की किलकार।
उस घर में भरती रहें, लक्ष्मी जी भण्डार।।०१३९।।

जो तू चाहे पुत्र दे, तुझको आदर मान।
मात-पिता को आपने, पहले तू पहचान।।०१४०।।

मधुबाला में खो रहा, मधुशाला में व्यस्त।
हाय अभागा कर रहा, स्वयं उजाला अस्त।।०१४१।।

पूत-सपूत न हो सका, जुड़ न सका धन-धान।
भीख माँगते घूमते, श्री आदर्श महान।।०१४२।।

राजनीति को देखिए, कटे नासिका, कान।
परपतिरत रस ले रही, कलयुग में श्रीमान।।०१४३।।

पीर घनी घनघोर है अंतर्मन अवसाद।
जहाँ न्याय ही बिक गया, वहाँ व्यर्थ फरियाद।।०१४४।।

प्रीत और विश्वास का, उठा धरा से नाम।
अब ढूँढें से भी नहीं, मिलें पुरुष निष्काम।।०१४५।।

कोपभवन जाग्रत हुआ, गई मन्थरा जाग।
शायद फिर दशरथ मरें, रोय अयोध्या भाग।।०१४६।।

जिस पर होय हितेश को कुछ सन्देह गुमान।
जा नहिं उसके संग में, जो चाहे कल्याण।।०१४७।।

माटी से माटी मिले, मूरत बने तुरंत।
माटी ही जीवन बने, माटी ही है अन्त।।०१४८।।

ढूँढे से यदि मिल सके, मीत, प्रीत, विश्वास।
तब ही जीवन सफल हो, मिटे हृदय की प्यास।।०१४९।।

परदुख में जो हो दुखी, परसुख में हर्षाय।
सबको दे शुभकामना, तब हितेश कहलाय।।०१५०।।

धर्म धीर, पत्नी सखा, परखे तुलसीदास।
पर हितेश आपत्ति में, परख आत्मविश्वास।।०१५१।।

काम न आवै सुत सखा, समय नचावत जाय।
उसको कौन नचाइये, ईश कृपा जो पाय।।०१५२।।

साँप सपेरे को डसे, डूबे तैरनहार।
पुत्र पिता-मुख अग्नि दे, क्या विचित्र व्यवहार।।०१५३।।

सपने रचना छोड़ दे, कविता, सरिता छोड़।
उसने भी दोहे लिखे, तू भी इन्हें मरोड़।।०१५४।।

दुर्दिन में रख धैर्य तू, चुप्पा होकर बैठ।
फिर नीके दिन आइहैं, फिर लागेगी पैठ।।०१५५।।

गुन–गुन–गुन करता फिरे, मन–मन मोदक खाय।
या तो निकसी लाटरी, या धन मिला गड़ाय।।०१५६।।

गुब्बारे को देखकर, बच्चा करता बैन।
खाली जेबें बाप की, जल भर आया नैन।।०१५७।।

चलते ही अपशगुन हो, पत्नी करे विरोध।
सुन हितेश उस कार्य में, होय सदा गतिरोध।।०१५८।।

रौनक मेले में बहुत, धनिकों का विश्वास।
घूमे भौचक्का हुआ, निर्धन बहुत उदास।।०१५९।।

मिट्टी के भगवान भी, सस्ते नहीं हितेश।
मेले में दादू दुखी, माँगे पौत्र गणेश।।०१६०।।

पैसे के कारण भये, अपने मुझ पर क्रूर।
जब मैं खाली जेब था, सब थे मुझसे दूर।।०१६१।।

जिसको सबने तज दिया, उसको राम दुलार।
जिसका अपना कुछ नहीं, उसका सब संसार।।०१६२।।

जितना तुझसे निभ सके, रख उतना संबंध।
अधिक कसे गल घोटता, सुन हितेश गुलिबन्ध।।०१६३।।

रावण की लंका जली, मिटा कंस का राज।
स्वर्ण मुकुट में जा घुसे, श्री कलयुग महाराज।।०१६४।।

सत्ता का मद पान कर, मन में रख कुविचार।
कुरुकुल सा ही नष्ट हो, करके अत्याचार।।०१६५।।

बँटवारा जबसे हुआ, शत्रु बन गये मित्र।
मिलकर रहने का कहीं, खोया गया चरित्र।।०१६६।।

मन से मीरा बन गया, जब श्रीदामा दीन।
प्रभु ने उसको कर दिया, फिर दारिद्र विहीन।१६७।।

जो राधे-राधे जपे, वह प्रिय लागे श्याम।
राधा बिना अपूर्ण है, मेरा राधेश्याम।।०१६८।।

इत उत की मत बात कर, केवल भज घनश्याम।
कर्म किये जा स्वतः ही, बन जाएँगे काम।।०१६९।।

देवपुरा की कृपा से, हम, द्वारा श्रीनाथ-
पहुँच गये तो यों लगा, हम हो गये सनाथ।।०१७०।।

राम कृपा से बन गये, सारे बिगड़े काम।
काम सरे प्रभु कृपा से, हुआ भक्त का नाम।।०१७१।।

सत्य वचन से सुख मिले, झूठ वचन संताप।
एक झूठ ना खप सके, भले करो सौ जाप।।०१७२।।

एक झूठ के कारणे, क्यों खोता सुख-चैन।
सत्य बोलकर देख तो, महकेंगे दिन-रैन।।०१७३।।

एक बार ही चढ़ सके, किसी झूठ का रंग।
हर मानव पर हर समय, चढ़े न झूठी चंग।।०१७४।।

अहंकार जिसने किया, भोगे कष्ट अपार।
परिजन पुरजन सब छुटे, खोया सुख संसार।।०१७५।।

अहंकार से उपजते, क्रोध, लोभ, अविवेक।
बुद्धिहीन होकर मनुज, करता पाप अनेक।।०१७६।।

लक्ष्मण से रावण कहा, निकट रहा जब अन्त।
बुरे काम को टाल दो, अच्छा करो तुरन्त।।०१७७।।

जो विनम्रता से सदा, करते सद्व्यवहार।
उन पर रहती है सदा प्रभु की कृपा अपार।।०१७८।।

सुरा-सुन्दरी पर लिखा, काव्य सुने दे ध्यान।
आज सुहाते ही नहीं, भाव-भक्ति के गान।।०१७९।।

हो विनम्रता, मृदुलता, से परिपूर्ण स्वभाव।
उसे कभी व्यापे नहीं, परिजन मित्र अभाव।।०१८०।।

माँ की गोदी सा सुखद, स्वर्ग नहीं श्रीमान।
माँ की पूजा भक्ति से, हों प्रसन्न भगवान।।०१८१।।

मातु सर्वदा सोचती, सुत हो श्रेष्ठ विशिष्ट।
देव, असुर, किन्नर कभी कर ना सकें अनिष्ट।।०१८२।।

माँ ममता रसधार से, बने स्वर्ग सम गेह।
दुग्धपान से मातु के, बने वज्र सम देह।।०१८३।।

घर का सुख सौन्दर्य सब, है माता की देन।
माँ ही है जो बाँधती, सम्बन्धों की चेन।।०१८४।।

सुत पर आपद् देखकर, माँ बन जाती ढाल।
बैरी पर माँ पूत के, झपटे बन विकराल।।०१८५।।

जन्मा तब रोता रहा, कुछ करना ना आय।
हँसना-चलना-बोलना माँ ने दिया सिखाय।।०१८६।।

माँ से बड़ा न कोउ भी, गुरू, पिता, भगवान।
वही बना दे पुत्र को, जो ले मन में ठान।।०१८७।।

अनुसुइया माता बनी, तीन देव शिशु रूप।
सकल विश्व में छा गया, माँ का रूप अनूप।।०१८८।।

जो कुछ भी मैं आज हूँ, माँ की कृपा विशेष।
माँ के ही आशीष से, मैं बन सका हितेश।।०१८९।।

धनिक और नेताओं का, होता है सत्कार।
आश्रम में हर सन्त के, निर्धन को दुत्कार।।०१९०।।

विद्यालय में अब नहीं, प्रतिभा को सम्मान।
यहाँ दाखला तब मिले, लाखों जब दो दान।।०१९१।।

काले धन का कर रहे, धनवन्ता जी दान।
दान दिये से धन बढ़े, इसका रखते ध्यान।।०१९२।।

काला धन होने लगा, आश्रम में स्वीकार।
भक्त श्रेष्ठ ने भेज दी, गुप्त दान में कार।।०१९३।।

आश्रम में रहने लगीं, भले घरों की नार।
चरण चापती गुरू के, कर पति का प्रतिकार।।०१९४।।

सन्त-महन्तों ने किया, शुरू एक व्यापार।
योग ध्यान की फीस है, इनकी कई हजार।।०१९५।।

आश्रम में हर सन्त ने, खोल दिये उद्योग।
बेचे हरबल औषधी, करा रहे हैं योग।।०१९६।।

जो कहते हैं, लोभ तज, लगा भजन में ध्यान।
धन-सम्पद् उनके यहाँ, अरबों में श्रीमान।।०१९७।।

ऋषियों-मुनियों की सखे बदल गई पहचान।
अनपढ़ बापू बन गये, पढ़े-लिखे भगवान।।०१९८।।

अस्पताल कॉलेज भी, आज बने व्यापार।
तगड़ी मोटी फीस दो, तब होता उपचार।।०१९९।।

गुप्त दान में खप रहा, काला धन श्रीमान।
इसीलिए तो बन रहे, आश्रम आलीशान।।०२००।।

रिश्वत सुविधा शुल्क में, काला धन खप जाय।
रहे सुरक्षित श्वेत धन, तुरतहि काम बनाय।।०२०१।।

राजनीति में हो रही, घुटन अनैतिक घोर।
जब से संसद में घुसे, घोटाले सिरमोर।।०२०२।।

काला धन इतना बढ़ा घटा श्वेत का मान।
इसके कारण बढ़ रहा गुप्त रूप से दान।।०२०३।।

दान दिये से धन बढ़े, हुआ प्राप्त जब ज्ञान।
मुक्त हस्त से कर रहे, वह काला धन दान।।०२०४।।

यात्रा का आरंभ कर, मन में सुमिर गनेश।
पाएगा गंतव्य तू, निश्चय जान हितेश।।०२०५।।

माँ सरस्वती अब करो, मुझ पर कृपा अपार।
महाकाव्य मैं रच सकूँ, कर दो यह उपकार।।०२०६।।

लेख, गीत, कविता, गज़ल, लिक्खूँ मैं जब तात।
आन विराजो बुद्धि में, हंसवाहिनी मात।।०२०७।।

चन्दा सा मुख देखकर, जिसकी होती प्रात।
भाग्य सदा अनुकूल हो, करें कृपा शिव, तात।।०२०८।।

जब तक माँ भू पर रही, पाया स्नेह दुलार।
आज स्वर्ग से कर रही, मुझ पर कृपा अपार।।०२०९।।

ईश कृपा से हो रहे, पूर्ण सभी मंतव्य।
मात-पिता की कृपा से, पाया है गंतव्य।।०२१०।।

राम कृपा से विभीषण, पाया लंका राज।
घर का भेदी पर उसे, कहता सभी समाज।।०२११।।

मात-पिता को दे सदा, सुख, आदर, सम्मान।
ऐसा ही सुख तुझे भी, दे तेरी सन्तान।।०२१२।।

लिख कविता अतुकांत ही, हाइकु और अगीत।
यही समझते पद्मश्री, देने वाले मीत।।०२१३।।

पत्नी सुख चाहे अगर, दे उसको सम्मान।
यही मधुरता कर सके, घर हो स्वर्ग समान।।०२१४।।

परदारा के प्रेम में, खोया सब सुख-चैन।
नर्क बना घर आपना, बिखर गये दिन रैन।।०२१५।।

परनारी के मोह में, भूल गया कर्त्तव्य।
भटक गया जब राह से, पाता क्या गंतव्य।।०२१६।।

बाम विधाता जब हुआ, मिला कुसंग हितेश।
ईश कृपा से ही मिले, सतसंगती विशेष।।०२१७।।

ऊँचा उठना श्रेष्ठ है, करें यत्न श्रीमान।
पर जो नीचे हैं खड़े, उन्हें न बौना जान।।०२१८।।

जो तेरी जय बोलते, दे कुछ उन्हें महत्त्व।
जय-जय पाने के लिए, रीति यही जग-सत्त्व।।०२१९।।

सुख देगा सुख मिलेगा, दुख देकर दुख पाय।
जो जिसने बोया नहीं, वह काटेगा नाय।।०२२०।।

श्रीनाथ जी द्वार पर, पहुँचे पत्नी साथ।
दर्शन कर श्रीनाथ का, दोनों भये सनाथ।।०२२१।।

छुए चरण गौमातु के, पाया आशीर्वाद।
कृपा करें श्रीनाथ जी, व्यापे नहीं विषाद।।०२२२।।

गौशाला श्रीनाथ में, कामधेनु गौ मात।
ता नीचे से निकलकर, हुआ प्रफुल्लित गात।।०२२३।।

देवपुराजी की कृपा, सदा रहेगी याद।
जिस कारण श्रीनाथ से, पाया आशीर्वाद।।०२२४।।

बड़ी कृपा की आपने, शिरडी के महाराज।
दर्शनहित बुलवा लिया, सफल हो गया आज।।०२२५।।

शिरडी साँई नाम में, जिसको है विश्वास।
उसको साँई कृपा से, व्यापे नहीं उदास।।०२२६।।

साँई नाथ भभूत को, अपने सिर पर धार।
दुर्गम से दुर्गम सभी बाधाएँ हो पार।।०२२७।।

सत साँई ने तज दिया, यह सराय संसार।
किन्तु शीघ्र ही कहीं पर, फिर लेंगे अवतार।।०२२८।।

मगन हुआ, प्रमुदित हुआ, हिय में उठी हिलोर।
साँई के दरबार में, सुन जयकारा घोर।।०२२९।।

शिरडी के ही पास में, है शिंगनापुर धाम।
कण-कण में लिक्खा जहाँ, शनीदेव का नाम।।०२३०।।

शनीदेव को शिव किये, नियत देवता न्याय।
कैसे फिर शनि भक्त पर, हो सकता अन्याय।।०२३१।।

शनीदेव जिस घर घुसैं, ले चाँदी के पाँव।
उसके घर छायी रहे, सुख-सम्पद् की छाँव।।०२३२।।

खेल-खेल में खो गए, बचपन के दिन-रैन।
भूली-बिसरी सुधि करें, अब मन को बेचैन।।०२३३।।

कभी अचानक याद में, आता अपना गाँव।
लगता जैसे टेरती, हो पीपल की छाँव।।०२३४।।

कैसे अच्छे दिवस थे, कैसी मोहक शाम।
बाबा लाते टोकरा, भर-भर मीठे आम।।०२३५।।

खेल-खेल में जब कभी, होती थी तकरार।
अम्मा देतीं झिड़कियाँ, दादी करें सँभार।।०२३६।।

चुन्नू-मुन्नू खेलते, लुका-छिपी का खेल।
कभी बजाते सीटियाँ, कभी बनाते रेल।।०२३७।।

सोने से पहले सदा, जुड़ती थी चौपाल।
जिसमें अपनी ही कहें, सब दे-देकर ताल।।०२३८।।

चोर-सिपाही खेलकर, जब थक जाते मित्र।
तब आकर चौपाल में, सुनते रामचरित्र।।०२३९।।

वर्षा ऋतु में बनाकर, हम काग़ज़ की नाव।
नदी-नहर में छोड़कर, पूरा करते चाव।।०२४०।।

मिला गाँव में सभी से, प्यार और सम्मान।
पर आकर अब शहर में, सबसे सब अंजान।।०२४१।।

कहीं मिलावट थी नहीं, गाँव गोट में प्यार।
शुद्ध मिलावट का हुआ, शहर-नगर व्यवहार।।०२४२।।

खान-पान सब शुद्ध था, सीधे-सच्चे लोग।
आज शहर में लग गया, सबै झूठ का रोग।।०२४३।।

मित्र-मित्र के साथ में, छल से करता बात।
एक-दूसरे के लिए, सभी सोचते घात।।०२४४।।

रिश्ते-नाते हो गये, मतलब के व्यवहार।
काम पड़े सौजन्यता- ओढ़ करें व्यापार।।०२४५।।

अनुकम्पा गुरु द्रोण की, अर्जुन बना महान।
भीष्म, कर्ण पर भी पड़े, भारी उसके बान।।०२४६।।

चंद्रगुप्त को जब मिले, गुरु चाणक्य समान।
विश्व विजय उसने करी, सदा हुआ कल्यान।।०२४७।।

सत साँई के नाम से, जुड़ा रहा उपकार।
ईश्वर का संसार को, था सुन्दर उपहार।।०२४८।।

जब से ऊषा ने किया, मम गृह द्वार प्रवेश।
सुख ही सुख मिलते रहे, मिटते रहे क्लेश।।०२४९।।

जीवन की हर भूल का, कीजै पश्चात्ताप।
भले मिटे ना भूल पर, कम होगा संताप।।०२५०।।

माँ से बढ़कर कुछ नहीं, खोजा सकल जहान।
धरती पर माँ रूप है, ईश्वर का वरदान।।०२५१।।

अन्धा हो राजा अगर, लूला मंत्री होय।
लँगड़ा सेनाध्यक्ष हो, नियति पराजय होय।।०२५२।।

लिखे हाइकू बन गये, कविवर श्रेष्ठ महान।
राजनीति में पहुँच थी, पाया श्री सम्मान।।०२५३।।

बाढ़ आइ तो पी गये, सारा राहत कोष।
सूखा पड़ते कर लिया, थोड़े में संतोष।।०२५४।।

कार्यालय में सो रहे, पग पसार निष्काम।
पाया सुविधा शुल्क तो, हो गये पूर्ण सकाम।।०२५५।।

गति से पगडंडी बने, इच्छा से विश्वास।
निश्चयी हो यात्री, मंजिल उसके पास।।०२५६।।

जिसकी लम्बी पूंछ है, वो ही प्रभु के पास।
'पहुँच' पूंछ जिस पर नहीं, उसके हाथ निरास।।०२५७।।

जग हित रक्षण के लिए, सीता तजते राम।
वही लोकहित के लिए, युद्ध रती घनश्याम।।०२५८।।

घोड़े के बल से अधिक, नहिं कोई असवार।
लेकिन कौशल बुद्धि से, उस पर रहे सवार।।०२५९।।

उठे गिरे पुनि-पुनि गिरे, पुनः उठे फिर धाय।
ऐसे सतत् प्रयास से, लक्ष्य पाँव तक आय।।०२६०।।

ज्ञानी से बढ़ कर धनिक, कोई नहीं हितेश।
गुणी चतुर्दिक ही पुजे, राजा पुजते देश।।०२६१।।

आत्मनियंत्रण श्रेष्ठ है, यह उन्नति का मूल।
हर संयत तैराक को, मिल जाता है कूल।।०२६२।।

मनमानी सह सभी की, अभी जरा मनमोर।
फिर अपनी सी कर लियो, जब दिन बहुरें तोर।।०२६३।।

गुणवंता गुण देखता, सबमें हर्ष विशेष।
अवगुण ही देखे सदा, जो गुणहीन हितेश।।०२६४।।

गुणवंता बलवंत है, नहीं किसी से हीन।
भाग्यवंत के सामने, मगर बजावै बीन।।०२६५।।

चिन्ता सोच-विचार में, तन-मन रहा अधीर।
पर न समस्याएँ घटीं, अति दुस्तर गम्भीर।।०२६६।।

लक्ष्यहीन मानव सदा, रहे भ्रमित मतिहीन।
किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा, खड़ा बजावै बीन।।०२६७।।

समय, समय की बात है, समय समय की बात।
समय देखकर कीजिए, समय सुहाती बात।।०२६८।।

अहंकार में कर लिया, अपने कुल का नाश।
कल तक जिसके हाथ में, थे धरती आकाश।।०२६९।।

महँगाई में भर गये कुछ के घर-भण्डार।
नौकरशाहों के हुए, वेतन दो के चार।।०२७०।।

भूखा, प्यासा सो गया, चेतन का परिवार।
उस गरीब पर यों पड़ी, महँगाई की मार।।०२७१।।

गई नियंत्रण लाँघकर, महँगाई जब मित्र।
राजनीति का हो गया, नंगा तभी चरित्र।।०२७२।।

पतिवर्ता के ढोंग से, गया हृदय जब ऊब।
कुछ विकल्प जब ना बचा, गया धार में डूब।।०२७३।।

जनप्रतिनिधि उसको चुनो, जो जनता का होय।
जो नेता थोपा गया, वह अपनापन ढोय।।०२७४।।

गंगा को माँ मानते, साधू, सज्जन नेक।
वही डूबते धार में, जिनके पाप अनेक।।०२७५।।

गंगा में डुबकी लगा, श्रद्धा मन में धार।
पाप कटें, संकट मिटें, हो भवसागर पार।।०२७६।।

गंगा, यमुना में कहो, किसका पानी श्रेष्ठ।
गंगाजल अमरित सरस, यमुना जल भी ज्येष्ठ।।०२७७।।

गंगा में डुबकी लगा, कर तब प्रभु का ध्यान।
मोक्ष मिले देहांत पर, जीवन में सम्मान।।०२७८।।

गंगाजल के पान से, मिटें शोक सब रोग।
जीवन में व्यापें नहीं, जनम-जनम के भोग।।०२७९।।

गंगा, यमुना, सुरसती संगम बना प्रयाग।
वही त्रिवेणी पा सके, जिसका मन प्रभु लाग।।०२८०।।

ईश भक्ति मन में बसी, हुई वासना दूर।
उसे न माया व्यापती, जो भक्ती में चूर।।०२८१।।

काम, क्रोध, मद, लोभ हैं, दुष्ट विकट यह चार।
बल, विवेक, बुद्धी हरें, तन, मन कर दें क्षार।।०२८२।।

चींटी सतत् प्रयास कर, दुगुना बोझ उठाय।
गिरती-पड़ती वह उसे, घर तक लेकर आय।।०२८३।।

भौतिकता की दौड़ में, खोया गया चरित्र।
उलटा करके रख दिया, नैतिकता का चित्र।।०२८४।।

मन में छल का चोर है, मुख पर मृदु मुस्कान।
साधू बनकर घूमता, कलियुग में शैतान।।०२८५।।

भ्रष्टाचारी ना मिटे, मिटा न भ्रष्टाचार।
भ्रष्ट आचरण बन गया, जब से इक व्यापार।।०२८६।।

बादल बरसा गगन से, बुझी धरा की प्यास।
गुपचुप सावन आ गया, हिय में लिये हुलास।।०२८७।।

मेरे मन के भाव हैं, दोहों के संसार।
इनमें भाव तलाशिये, होगी कृपा अपार।।०२८८।।

पिंगल का ज्ञाता नहीं ना मात्रा का ज्ञान।
अपने को गिनता नहीं, मैं हितेश विद्वान।।०२८९।।

मेरे आलोचक सभी, जियें बरस सौ बीस।
मेरी कमी निकालकर, किया मुझे इक्कीस।।०२९०।।

सूर नहीं तुलसी नहीं ना मैं बुद्धि प्रकाश।
उड़ता हूँ दोहे लिये भावों के आकाश।।०२९१।।

दोहे सभी अपूर्ण हैं, है बस पूर्ण विचार।
अवगत त्रुटियों से करा, कीजे कृपा अपार।।०२९२।।

अपने मन की बात को, समझ सभी की बात।
मैं दोहों में धरा के, मन की लिखता तात।।०२९३।।

एकलव्य की भाँति मैं करता हूँ संधान।
राम और राजन मिले, मुझको गुरू समान।।०२९४।।

अगर बुद्धिबल है नहीं, भुजबल का क्या अर्थ।
और भाग्यबल के बिना, यह दोनों भी व्यर्थ।।०२९५।।

कौरव कुल को खा गया, अहंकार का सर्प।
निगल गया बल-बुद्धि को, दुर्योधन का दर्प।।०२९६।।

लोकतंत्र गिरवी हुआ, एकतंत्र के हाथ।
प्रजातंत्र की आतमा, पीट रही है माथ।।०२९७।।

अँग्रेजी में दे रहे, भाषण श्री प्रधान।
देशभक्ति का खीचते, कैसा चित्र महान।।०२९८।।

क्रिकेट जैसे खेल पर, लुटा रहे धन मित्र।
सँवर सके था विश्व में, भरत भूमि का चित्र।।०२९९।।

गुरु वशिष्ठ से राम ने, पाया उत्तम ज्ञान।
राक्षस कुल का नाश कर, किया जगत कल्याण।।०३००।।

कलियुग आशा में खड़ा, कब लें प्रभु अवतार।
सर से ऊपर हो गया, अब तो भ्रष्टाचार।।०३०१।।

परपुरुषों के बीच में, नाच रही है नार।
भुला सभ्यता को दिया, कर कलुषित व्यवहार।।०३०२।।

टॉप जींस को पहनकर, युवती कितनी मग्न।
सोच रही है, और भी तन कैसे हो नग्न।।०३०३।।

त्याग रहे कौमार्य को, अविवाहित संबंध।
मर्यादाएँ लाँघकर, तोड़ रहे प्रतिबन्ध।।०३०४।।

आरक्षण ने कर दिया, नारी को स्वच्छन्द।
स्वतंत्रता का अर्थ भी, भूल गई मति मन्द।।०३०५।।

हुई अपावन देह तो, स्वर्ग न होगा गेह।
मिट जाएगी गृहस्थी, उठ जाएगा नेह।।०३०६।।

पुरुषों में भी बढ़ रहा, परनारी व्यभिचार।
यौन संक्रमित बढ़ रहे, हुए एड्स बीमार।।०३०७।।

पति-पत्नी में बढ़ रहा, मन के बीच मुटाव।
परनारी-परपुरुष में, जबसे जागा चाव।।०३०८।।

मात-पिता का आचरण, देख दुखी सन्तान।
दुराचरण में लिप्त हो, बने नहीं इन्सान।।०३०९।।

किटी पार्टियाँ खेलतीं, माता बच्चे भूल।
पिता क्लब में व्यस्त हैं, फूल बन गये शूल।।०३१०।।

आया ने सिखला दिए, बच्चों को वह राज।
जिनें देखकर सभ्यता, रोती आवे लाज।।०३११।।

वर्तमान में व्याप्त हैं, भ्रष्टाचार अनेक।
भीष्म, द्रोण की भाँति ही, है दोषी प्रत्येक।।०३१२।।

होती रही क्रिकेट में, धन की रेलमपेल।
लूट रहे हैं देश को, जुड़े खिलाड़ी खेल।।०३१३।।

रोजगार नहिं हो जहाँ, भूखा हो मजदूर।
धन बरबादी खेल में, महापाप है क्रूर।।०३१४।।

सोने की चिड़िया कभी, रहा हमारा देश।
घोटालों से अब हुआ, विश्व प्रसिद्ध विशेष।।०३१५।।

दूध-दही की प्रचुरता, थी अपनी पहचान।
अब मदिरा की खुल गईं, जगह-जगह दूकान।।०३१६।।

घोर प्रदूषित हो गया, पर्यावरण हितेश।
उगल रही हैं चिमनियाँ, गैस, धुआँ, अनिमेष।।०३१७।।

फटी पर्त ओजोन की, उत्सर्जन से मित्र।
धीरे-धीरे बन रहा, भू-विनाश का चित्र।।०३१८।।

खेल-खेल में जब किया, घोटालों का खेल।
दोषी व्यक्ती कर रहे, आज सुशोभित जेल।।०३१९।।

क्रोधी हो रही प्रकृती, मौसम भी प्रतिकूल।
निगल न जाए विश्व को, मानवता की भूल।।०३२०।।

कृषि प्रधान था देश तब, अब उद्योग प्रधान।
करा रहीं है चिमनियाँ, गैस, धुआँ, विषपान।।०३२१।।

भौतिकता में खो गई, आध्यात्मिक पहचान।
सकल विश्व में था कभी, भारत देश महान।।०३२२।।

व्यापारिक संस्था बने, आश्रम, पीठ, निकाय।
सारे सन्त-महन्त अब, करते हैं व्यवसाय।।०३२३।।

जनप्रतिनिधियों ने किया, सत्ता पर अधिकार।
जनता जो थी स्वामिनी, है फरियादी यार।।०३२४।।

लूट रहें हैं देश को, राजा और महन्त।
सन्त कर रहे प्रार्थना, हो दुष्टों का अन्त।।०३२५।।

भ्रष्ट आचरण हो गया, दूषित हुआ समाज।
प्रमुख हुआ वेश्या गमन, रिश्वत, मदिरा आज।।०३२६।।

गौ गंगा अरु विप्र सम, गायत्री सम्मान।
जो करता सो पावता, प्रभु की कृपा महान।।०३२७।।

कण-कण में प्रभु बस रहे, घट-घट में प्रभु व्याप्त।
जो भी निष्ठा से भजे, उसको दर्शन प्राप्त।।०३२८।।

मात-पिता में व्याप्त है, प्रभु का रूप अनूप।
माँ ममता की छाँव है, पिता शिशिर की धूप।।०३२९।।

मात-पिता की परिक्रमा, जो करता मन लाय।
उसे धरा की परिक्रमा, का भी फल मिल जाय।।०३३०।।

गुरु की कृपा हितेश हो, प्रभु की कृपा विशेष।
मिलें मान-सम्मान सब, अपने देश-विदेश।।०३३१।।

सत्कर्मों से स्वर्ग के, खुल जाते हैं द्वार।
दुष्कर्मों से नर्क सम, होता घर-संसार।।०३३२।।

प्रभु तो भक्ती से मिलें, सज्जन से सत्संग।
जो प्रभु कृपा न पा सकें, व्यापे उनें कुसंग।।०३३३।।

परदुख में जिसकी बहे, नयन अश्रु की धार।
उसी मनुज को प्राप्त हो, प्रभु की कृपा अपार।।०३३४।।

गुरू कृपा से ही खुलें, सकल ज्ञान के द्वार।
सब बाधाओं विघ्न में, करते गुरु उद्धार।।०३३५।।

पहिले तुलसी दास ने, भजा गुरू का नाम।
तभी रच सके राम का, चरित पुण्य सुखधाम।।०३३६।।

नेताजी देकर गए, आश्वासन कल रात।
पर गरीब मजदूर की, हुई न जीवन प्रात।।०३३७।।

राजनीति का खेल है, उल्टा-पुल्टा यार।
पड़ते सूखा भर गए, उनके घर-भण्डार।।०३३८।।

बहा दिए आ बाढ़ ने, मित्र अनेक मकान।
इसी दौर में बन गए, कुछ घर आलीशान।।०३३९।।

स्थायी कुछ करते नहीं, कुर्सी के अतिरिक्त।
अस्थायी से ही भरे, जो थी गुल्लक रिक्त।।०३४०।।

बाढ़ आए तो ना किये, कोई ठोस उपाय।
बाढ़ कोष इत-उत करो, लीपापोत दिखाय।।०३४१।।

जहाँ-जहाँ सूखा पड़े, वहाँ-वहाँ पर जाव।
राहत धन कुछ बाँट दो, शेष करो सटकाव।।०३४२।।

राजनीति में नीति का, जबसे हुआ अभाव।
मित्र खोखला हो गया, राम राज्य मन भाव।।०३४३।।

राजनीति का खेल है, ऐसा सुन्दर खेल।
जनता को खल प्राप्त हो, नेता पीवें तेल।।०३४४।।

नेता जी जब खुश हुए, वादे किए अनेक।
आश्वासन इतने दिए, झूम उठा प्रत्येक।।०३४५।।

राजनीति के मूल में, है आश्वासन मंत्र।
इसी सहारे चल रहा, राजधर्म का तंत्र।।०३४६।।

सफल वही नेता, करे, जो सुन्दर तकरीर।
सब्जबाग की खींच दे, भाषण में तस्वीर।।०३४७।।

निरा झूठ सच ही लगे, करता ऐसी बात।
नेता बनने योग्य है, सचमुच में वह तात।।०३४८।।

जो देवे कुछ भी नहीं, लगे कि देता होय।
नेता वही महान है, जो सपनों को बोय।।०३४९।।

घोटालों में व्याप्त हैं नेता सभी महान।
राजनीति की खोलकर, बैठे हैं दूकान।।०३५०।।

राजनीति से जब जुड़े, मात्र टके थे चार।
अब तो कई करोड़ के, हैं मेरे सरकार।।०३५१।।

माना भाग्य विशेष है, हर उन्नति का मूल।
किन्तु कर्म भी श्रेष्ठ हो, तब हो फल अनुकूल।।०३५२।।

साथ दे रहा जब तलक यह शरीर संसार।
तब तक ही जीवातमा, करती मारा-मार।।०३५३।।

जब तन तजती आतमा, कुछ ना जाता साथ।
राजा, रंक, फकीर सब, जाते खाली हाथ।।०३५४।।

हाथी शिखर न चढ़ सके, चींटी चढ़े तुरन्त।
हीन भावना हृदय से, अपने कर दे अन्त।।०३५५।।

वाक् युद्ध ही रह गया, राजनीति में शेष।
देश हिताहित कभी कुछ, होता नहीं हितेश।।०३५६।।

शक्ति प्रदर्शन में लगे, सारे दल श्रीमान।
सभा रैलियों में जुटा- भीड़ बने बलवान।।०३५७।।

देश भाड़ में जाय पर, गद्दी छिने न मोर।
इसी सोच में कर रहे, आंदोलन घनघोर।।०३५८।।

जनता को दिखला रहे, सब्ज़बाग़ के स्वप्न।
मूर्ख बनाकर देश को, नेता होते मग्न।।०३५९।।

व्यवसायी भी बन गये, साधू और महन्त।
राजनीति करने लगे, धनिक, बनिक सब सन्त।।०३६०।।

एक-दूसरे पर रहे, कीचड़ सभी उछाल।
भले-बुरे का अब नहीं, बाकी रहा सवाल।।०३६१।।

मल्लयुद्ध में भी हुआ, महिलाओं का जोर।
अबला यों सबला बनीं, है जनता में शोर।।०३६२।।

पुलिस, फौज में बढ़ रही, महिलाओं की माँग।
गिर गइ सभ्य समाज की, जल भराव से ढाँग।।०३६३।।

जिसको समझाया सदा, समझ पुत्र नादान।
अब उसकी भी समझ को, दे हितेश सम्मान।।०३६४।।

पुत्र वही जो पिता को, दे आदर सम्मान।
वर्ना पूत कपूत है, निश्चय करके जान।।०३६५।।

सूख गया मुख मात का, आपद में सुत जान।
सकल विश्व में है यही, ममता की पहचान।।०३६६।।

ईश्वर ने जब-जब कहा, माँगो कुछ वरदान।
माँगा तब माँ-बाप ने, निज सुत का कल्याण।।०३६७।।

बढ़ती हाथ सपूत के, सदा सम्पदा मित्र।
व्यसनों में देता उड़ा, पर सुत दुष्ट चरित्र।।०३६८।।

जिनके मन सपने नहीं, वह अपने ही नाहिं।
उन्नति कभी न कर सकें, बस सोते रह जाहिं।।०३६९।।

जो हितेश को देखकर, सलवट डाले भाल।
उससे मिलना व्यर्थ है, उससे मिलना टाल।।०३७०।।

बिहँस करे स्वागत सदा, पूर्ण प्रफुल्लित गात।
पास उसी के बैठकर, मन की करना बात।।०३७१।।

नजर चुरा कर जो मिले, उसे मित्र मत मान।
उसके मन में चोर है, इतना निश्चय जान।।०३७२।।

जो तेरी निंदा करे, उसे शत्रु मत मान।
यह दर्पण है देखकर, कमियों को पहचान।।०३७३।।

काँधे तक आने लगे, जब अपनी सन्तान।
लाड़-ताड़ना त्याग कर, पुत्र मित्र सम जान।।०३७४।।

पुत्र अगर वरदान है, बेटी है उपहार।
दोनों पर ही राखिये, स्नेह सिक्त व्यवहार।।०३७५।।

पुत्र पिता की शक्ति है, पुत्री कुल की लाज।
पुत्री के पग पूजता, सारा सभ्य समाज।।०३७६।।

बेटा-बेटी में करें, अन्तर नहीं सुजान।
दोनों ईश्वर अंश हैं, गुण में एक समान।।०३७७।।

जो बेटे की चाह में, भ्रूण कराए नष्ट।
ऐसी दुष्टात्मा सदा भोगे दारुण कष्ट।।०३७८।।

घोर पाप है भ्रूण की, हत्या करना मान।
ऐसे माता-पिता का, कभी न हो कल्याण।।०३७९।।

पुत्री की मुस्कान में, रहता स्नेह अपार।
घर के सभी तनाव को, हरता उसका प्यार।।०३८०।।

पुत्री पर ही टिके हैं, सामाजिक अनुबन्ध।
टिकता इस आधार पर, दो कुल का सम्बन्ध।।०३८१।।

कोलाहल में समय के, पुत्री है संगीत।
कुल मर्यादा में रहे, यही सिखाती रीत।।०३८२।।

बुद्धी और विवेक से, जो करते हैं कर्म।
उनको कभी न व्यापता, किंचित आपद् धर्म।।०३८३।।

जो सबकी सुनकर करे, मोल-तोल कर बात।
उसे न कोई दे सके, बात-बात में मात।।०३८४।।

जो परहित में रत रहे, निजी स्वार्थ को भूल।
उसके पथ में सर्वदा, प्रभू खिलायें फूल।।०३८५।।

मान बढ़ाएँ बेटियाँ, पुत्र बढ़ाएँ शान।
मूर्ख वही जो मानता, इनको नहीं समान।।०३८६।।

बेटी सदा निबाहती, परिवारी गठबन्ध।
ताई, चाची, मौसियाँ, साली से सम्बन्ध।।०३८७।।

बेटा घर की शक्ति है, बेटी है श्रृंगार।
घर में रखता संतुलन, बेटी का व्यवहार।।०३८८।।

पुण्य कार्य है धरा पर, शिक्षा औ' धन दान।
किन्तु सभी से श्रेष्ठ है, जग में कन्यादान।।०३८९।।

अधिक समय सहती नहीं, जनता अत्याचार।
स्वतंत्रता संग्राम की, याद करो हुँकार।।०३९०।।

सुन्दर तन की स्वामिनी, पर कर्कश हों बोल।
जैसे साँपिन ने लिया, ओढ़ सुनहरा खोल।।०३९१।।

दमन चक्र चलता नहीं, अधिक समय तक तात।
गाथा रावण-कंस की, जग में है विख्यात।।०३९२।।

भूमि पराई जीत ली, हने सहस्रों प्राण।
किया सिकन्दर ने मगर, खाली हाथ प्रयाण।।०३९३।।

काम, क्रोध, मद, लोभ हैं, सब अनीति के द्वार।
इनसे बचकर चालिये, यदि चाहे उद्धार।।०३९४।।

डूब गया मझधार में, कुशल श्रेष्ठ तैराक।
मदिरा पीकर नदी में, कूदा छपक-छपाक।।०३९५।।

पहिनें चोला साधु का, किन्तु करें व्यवसाय।
इनके आश्रम खप रही, काले धन की आय।।०३९६।।

जिसने कल धोखा दिया, आज न कर विश्वास।
भले मुखौटा बदल कर, आए कितना पास।।०३९७।।

चाटुकार से मित्रवर, रहिये सदा सतर्क।
जाने कहाँ डुबाय दें, उसके छलिया तर्क।।०३९८।।

मित्र वही जो थाम ले, कठिन समय में बाँह।
पुत्र वही जो पिता को, दे आदर की छाँह।।०३९९।।

साधू-सन्त महन्त के आश्रम बने विशाल।
खोजो तो इनमें मिले, कई अरब का माल।।०४००।।

आरक्षण ने कर दिया, लज्जाहीन समाज।
वक्ष उघाड़े डोलती, आज सड़क पर लाज।।०४०१।।

महिलाओं की अस्मिता, पर पुरुषों का वार।
महिला आरक्षण दिया, छीन लिया घर-द्वार।।०४०२।।

पर पुरुषों से बन रहे, अब खुलकर सम्बन्ध।
पती नहीं अब चाहिए, व्यवसायिक अनुबन्ध।।०४०३।।

महिला आरक्षण बना, जबसे एक विचार।
चीर-हरण तब से बढ़े, और बढ़े व्यभिचार।।०४०४।।

दिल्ली के मैदान में, रामदेव पर वार।
याद हुआ लंकेश का, भू पर अत्याचार।।०४०५।।

सर्पदंश का जगत में, है सम्भव उपचार।
पर खाली जाता नहीं, विष कन्या का वार।।०४०६।।

पतिवर्ता सी बन रहे, घर में कुलटा नार।
उस घर की रक्षा कभी, कर न सकें करतार।।०४०७।।

शीत कक्ष में बैठकर, संसद करे विचार।
भीषण गर्मी का करें, कैसे अब प्रतिकार।।०४०८।।

अक्षमता से उपजते, क्रोध और अविवेक।
सक्षम खोते ही नहीं, अपना बुद्धि, विवेक।।०४०९।।

कोइ समस्या अस नहीं, जिसका नहीं निदान।
उत्तर हर इक प्रश्न का, ख़ोजहिं लें विद्वान।।०४१०।।

समाधान जिसका नहीं, कोउ समस्या नाहिं।
वर देते हैं सर्वदा, ईश तपस्या माहिं।।०४११।।

शाम हुए घर लौटते, पशु-पक्षी, खग-वृन्द।
मदिरा पीकर लोटते, नाली में मति मन्द।।०४१२।।

मूर्ख मित्र की बात पर, मत कीजे विश्वास।
भले सोइए रात भर, नागराज के पास।।०४१३।।

कानखजूरा कान में, डाल करे विषपान।
लेकिन मूरख मित्र की, बात कभी ना मान।।०४१४।।

तेरे मन की बात को, जो ना दे सम्मान।
ऐसे मित्र-अमित्र से, बचकर चल नादान।।०४१५।।

सुत वह जो रक्षा करे, वृद्ध पिता का मान।
ऐसे सुत को त्याग दे, जो ना दे सम्मान।।०४१६।।

भाई हो तो भरत सा, या लक्ष्मण सा वीर।
वरना तो सहनी भली, इकलेपन की पीर।।०४१७।।

माता हो तो सुमित्रा, व्यापे जिसे न मोह।
राम संग भेजे लखन, सहकर कठिन विछोह।।०४१८।।

तुरत काम अच्छा करे, और बुरा दे टाल।
उसका कभी न हो सके, रावण जैसा हाल।।०४१९।।

ऋतुओं के विपरीत मत, करें खान या पान।
हो जाता है कष्ट वह, जिसका नहीं निदान।।०४२०।।

जन्म दिया छह पुत्र को, वृक्ष लगाओ सात।
तभी प्रदूषण को सखे, दे पाओगे मात।।०४२१।।

नंगे अगर पहाड़ हों, तो वर्षा ना होय।
सूखा पड़े अकाल में, भूखा मानव रोय।।०४२२।।

खुलकर बरसे गगन तो, बिहँसे बाग-तड़ाग।
झूमे वृक्ष पलाश के, जनता खेले फाग।।०४२३।।

वर्षा हो तो खिल उठें, खेत और खलिहान।
बिन वर्षा सब सून है, कहते ग्राम प्रधान।।०४२४।।

मूर्ख अहंकारी सदा, करते मिथ्या बात।
अपने ही सौभाग्य पर, धर देते हैं लात।।०४२५।।

आत्मघात को विवश तब, होना पड़ा हितेश।
पत्नी जब बैरी सरिस, करती घर में क्लेश।।०४२६।।

सूर्पणखा जब एक थी, डूब गया लंकेश।
अब अनगिनती डोलतीं, नहीं बचेगा देश।।०४२७।।

कभी-कभी मन मारकर; सुन बुद्धी का तर्क।
अन्तर समझेगा तभी, कहाँ स्वर्ग औ' नर्क।।०४२८।।

कुंज-नयन में छिप रहा, स्वार्थ और अभिमान।
इनसे बचकर चाहिए, रहना ओ नादान।।०४२९।।

गाय बेचकर खोलते, मदिरा की दूकान।
स्वयं कराते, कर रहे, सुबह-शाम विषपान।।०४३०।।

मदिरा पी आसक्ति में, बोल उठे श्रीमान।
तू ही मेरी जिन्दगी, तू मेरी भगवान।।०४३१।।

पति की बात न मानती, जो पत्नी नादान।
वही डुबाती सर्वदा, घर का नौकायान।।०४३२।।

पति विरुद्ध भड़का रही, सुत को कुलटा नार।
उसे त्याग दे सहज ही, यदि चाहे उद्धार।।०४३३।।

घर वह स्वर्ग समान है, जहँ मुखिया की बात।
सब सुनते सब मानते, बिन विरोध के तात।।०४३४।।

श्रेष्ठ स्वयं को मानकर, रहता सबसे दूर।
उसके हर अभिमान को, प्रभु कर देते चूर।।०४३५।।

गुरू अरस्तू से हुए, श्री चाणक्य महान।
चन्द्रगुप्त से सिकन्दर, गया पराजय मान।।०४३६।।

माफ करें नहिं शत्रु को, काटें शीश तुरन्त।
वरना होता है सदा, पृथ्विराज सा अन्त।।०४३७।।

पृथ्विराज ने क्षमा दी, गौरी उन्निस बार।
गौरी ने माना नहीं, पर उसका उपकार।।०४३८।।

गौरी को देकर क्षमा, सोया पृथ्वीराज।
अंधकार में रात के, झपटा गौरी-बाज़।।०४३९।।

जो जैसा तुझसे करे, वैसा कर व्यवहार।
यही कृष्ण का ज्ञान है, गीता का है सार।।०४४०।।

काम, क्रोध, मद, लोभ का सबके मन में वास।
किन्तु वही नर श्रेष्ठ जो, बने न इनका दास।।०४४१।।

प्रतिस्पर्धा में नहीं, करें द्वेष का ध्यान।
मर्यादा में श्रेष्ठ जन, करते हैं संधान।।०४४२।।

भावों के आकाश में दोहों का संसार।
माँ सरस्वती का मुझे, है अनुपम उपहार।।०४४३।।

भीड़ भरे एकांत में, अपनापन पहचान।
लक्ष्य तभी मिलता सखे, रहे सतत् अभियान।।०४४४।।

दूर प्रलोभन से रहो, यदि चाहो कल्यान।
दलदल में यदि फँस गए, मुश्किल है उत्थान।।०४४५।।

जग में रहकर जो करे, जग जैसा व्यवहार।
वह पाता है सर्वदा, स्नेहादर-सत्कार।।०४४६।।

अगर अजन्मी रह गई, पुत्री मित्र हितेश।
मिट जाएँगे धरा से रिश्ते सभी विशेष।।०४४७।।

खो जाएगा शून्य में, राखी का त्योहार।
परिवारों में रहेगा, फिर न मित्र व्यवहार।।०४४८।।

भाई दोयज किसलिए, कौन रचेगा तात।
कौन जलाएगा दिये, दीवाली की रात।।०४४९।।

जो ईश्वर के नाम पर, करते हैं व्यवसाय।
जीवन भर प्यासे रहें, तृष्णा सदा सताय।।०४५०।।

पापी हैं वो सन्त जो, बेच रहे हैं धर्म।
कोढ़ी होंगे वह सभी, जो करते दुष्कर्म।।०४५१।।

कहलाते जो स्वयं को, बापू या भगवान।
वह ढोंगी हैं, निकट से ज़रा उन्हें पहचान।।०४५२।।

समझ सको यदि मित्र तुम, यह व्यवहारिक मर्म।
तो बेटी को जन्म दो, यह भी है सत्कर्म।।०४५३।।

मास दिवस वर्षा रहे, पवन चलें उनचास।
पशुपक्षी नरहीन हो, धरा करें विश्वास।।०४५४।।

दुर्योधन की कुटिलता और कर्ण सहयोग।
चीर हरण से बन गया महायुद्ध का योग।।०४५५।।

राजा निरत अधर्म में, सत्ता कुटिल प्रहार।
तभी रचयिता विश्व के, लेते हैं अवतार।।०४५६।।

राजा हो या रंक हो या हो सिद्ध फकीर।
प्रभु मिलते उसको, हृदय, जिसका निर्मल नीर।।०४५७।।

जो परहितरत, दुखी को, देख करे दुख भान।
प्रभु देते है सर्वदा उसको दर्शन ज्ञान।।०४५८।।

माता है पहली गुरू, शिक्षक दूजा मान।
इन दोनों की चरण रज, से होता कल्याण।।०४५९।।

दिशाहीन हर व्यक्ति को, गुरू दिखाते राह।
यदि चाहे कल्याण तो, गुरू चरण अवगाह।।०४६०।।

सब जीवों में श्रेष्ठ है, मानव रूप हितेष।
ईश्वर ने उसको रचा, देकर ज्ञान विशेष।।०४६१।।

गुरु से कोई भी बड़ा, जग में नहीं नरेश।
गुरू कृपा से ही मिलें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।।०४६२।।

गुरू विमुख का लोक में, कभी न हो कल्याण।
पाया गुरु आशीष जब, उसे मिले भगवान।।०४६३।।

गुरु महिमा सन्दर्भ में, कहते सन्त सुजान।
करें कृपा गुरु भाँति ही, हम पर श्री हनुमान।।०४६४।।

गुरू कृपा से सिकन्दर, योद्धा बना महान।
गुरु चाहें तो मूर्ख भी, बने श्रेष्ठ विद्वान।।०४६५।।

गुरू शिवाजी वीर के, थे, श्रीराम समर्थ।
समझाए निज शिष्य को, स्वतंत्रता के अर्थ।।०४६६।।

दिया विवेकानन्द को, गुरु ने ज्ञान अपार।
अमरीका जाकर किया, मित्र शून्य विस्तार।।०४६७।।

चन्द्रगुप्त चाणक्य का, शिष्य गुरू का साथ।
विश्व विजेता सिकन्दर, लौटा खाली हाथ।।०४६८।।

गुरु वशिष्ठ ने राम को, दिये अशीष अपार।
तभी सके दसशीश को, राम युद्ध में मार।।०४६९।।

सांदीपनी गुरु आश्रम, मिला कृष्ण को ज्ञान।
तोड़ा तब गोपाल ने, दुष्टों का अभिमान।।०४७०।।

गुरु सिंहों ने रच दिया, एक नया इतिहास।
खड़ी करी निज देशहित, फौज खालसा खास।।०४७१।।

गुरु का मन से कीजिए , आदर औ' सम्मान।
अक्षय वट बनकर करे, छाया गुरू महान।।०४७२।।

बुद्धिहीन को यदि मिले, गुरू कृपा विश्वास।
बन जाता है वही नर, अनुपम कालीदास।।०४७३।।

गुरु की सेवा जो करे, त्याग लोभ, मद, मान।
उसका ईश्वर कृपा से, होय सदा कल्याण।।०४७४।।

गुरू निरादर जो करे, मन राखे अभिमान।
सहना पड़ता है उसे, शिव का क्रोध महान।।०४७५।।

गुरु प्रतिमा के सामने, करी साधना भव्य।
धनुर्धरों में श्रेष्ठतम, बना वही इकलव्य।।०४७६।।

गुरु चाहे तो शिष्य भी बने विश्व सम्राट।
किन्तु अनादर जो किया, बिके गुलामी हाट।।०४७७।।

विश्वगुरू भारत बने, हो अखण्ड पुनि आज।
एकसूत्र में बँध सके, सारा अगर समाज।।०४७८।।

गुरू पिता माता सहित, मिलें अगर भगवान।
प्रथम मात, दूजे गुरू, बाद सभी सम्मान।।०४७९।।

देशप्रेम जिसमें नहीं, वह मानव अज्ञान।
उसको मिलती ही नहीं, कभी सही पहचान।।०४८०।।

एक गुरू हो राष्ट्र का, भाषा भी हो एक।
सकल विश्व में उसी को, दे आदर प्रत्येक।।०४८१।।

निज भाषा निज देश पर, जिसे नहीं अभिमान।
वह पशु से भी निम्न है, कहते हैं विद्वान।।०४८२।।

श्रद्धा, भक्ती, साधना और रहा विश्वास।
रत्नाकर गुरु कृपा से बन गये तुलसीदास।।०४८३।।

गुरु वाणी से दे दिया, जग को शुभ सन्देश।
गुरुनानक की जगत पर, है यह कृपा विशेष।।०४८४।।

गुरुविहीन जब से हुआ, अपना भारत देश।
लूट–अपहरण बढ़ गये, घोटालों से क्लेश।।०४८५।।

नहिं तुकान्त कुछ भी लिखा, पर हैं कवि श्रीमान।
पद्मश्री भी पा गए, थी ऊँची पहचान।।०४८६।।

कविता लिख पाते नहीं, लिखें अकविता हीत।
बलात्कार साहित्य से, लिख-लिख करें अगीत।।०४८७।।

कविता वह जो कण्ठ से, बहे छन्द-रस-धार।
शब्द सँजोये इस तरह, ज्यों युवती श्रृंगार।।०४८८।।

शब्दों की माला बनें, लय-स्वर-छन्द अनूप।
तब वह कविता प्रकट हो, जैसे उजली धूप।।०४८९।।

सुनी-सुनायी बात पर, मत कीजे विश्वास।
आदत है यह मनुज की, करता वाक्-विलास।।०४९०।।

इच्छाओं का दमन कर, मत बन उनका दास।
तृष्णा ऐसा रोग है, बुझे न जिसकी प्यास।।०४९१।।

कालाधन जितना बढ़ा, बढ़ा हृदय का रोग।
इसी जन्म में भोगने, पड़ते सबको भोग।।०४९२।।

नमन शहीदों को करें, अपने दोउ कर जोड़।
तजे न देकर प्राण भी, आज़ादी की होड़।।०४९३।।

क्रोधी, कामी, कुटिल जन, नहीं समझते मर्म।
लगते बड़े लुभावने, कलयुग में दुष्कर्म।।०४९४।।

अवसर मिलता भाग्य से, करने को सत्कर्म।
सदा निभाते श्रेष्ठजन, अपना-अपना धर्म।।०४९५।।

वीर भगत औ' राजगुरु, सावरकर, सुखदेव।
क्रांतिकारियों को सभी, निज यादों में लेव।।०४९६।।

शाहजफर अशफाक औ' बिस्मिल वीर सुभाष।
आज़ादी हित मर मिटे, छोड़े सभी विलास।।०४९७।।

जिनके कारण देश ने, पाया आज स्वराज।
यह विडंबना है उन्हें, भूल गये हम आज।।०४९८।।

लूट रहे हैं देश को, खद्दरधारी लोग।
हुए कौन बलिदान औ', कौन रहे हैं भोग।।०४९९।।

प्रजातंत्र पर हो गया, परिवारों का राज।
आज़ादी के बाद यह, हुई कोढ़ में खाज।।०५००।।

घोटालों में लिप्त हैं, मंत्री नेता सिद्ध।
नोच रहे हैं देश को, राजनीति के गिद्ध।।०५०१।।

बलात्कार व्यभिचार की, घटना बढ़ीं अनेक।
आज़ादी से घूमता, आरोपी प्रत्येक।।०५०२।।

सभी क्षेत्र में बढ़ गए, चाटुक चोर दलाल।
जबसे आज़ादी मिली, हैं वे मालामाल।।०५०३।।

अविवाहित रहने लगे, साथ-साथ बन मित्र।
खुलेआम व्यभिचार है, आज़ादी का चित्र।।०५०४।।

आज़ादी को डस रहा, आरक्षण का नाग।
तुष्टिकरण से लग रही, आज देश में आग।।०५०५।।

नंबर दो के नागरिक, बहुसंख्यक हैं आज।
हर संसाधन पर प्रथम, है अल्पों का राज।।०५०६।।

आतंकी आज़ाद हैं, करते धूम-धड़ाम।
आज़ादी से कर रहे, नक्सल कत्ले-आम।।०५०७।।

निर्बल ने पाया नहीं, आज़ादी का लाभ।
भूखा-प्यासा है श्रमिक, पिये दबंगी डाभ।।०५०८।।

बाल श्रमिक परतंत्र है, बँधुआ है मजदूर।
आज़ादी के नशे में, साहुकार हैं चूर।।०५०९।।

सांसद, मंत्री, विधायक, रहे देश को लूट।
पूरी इनें स्वतंत्रता, घोटालों की छूट।।०५१०।।

टी.वी. पर अभिनेत्री, है स्वतंत्र श्रीमान।
कम से कम कपड़े पहन, बनती फिल्मी डॉन।।०५११।।

महिलाएँ अब त्याग कर, लज्जा के परिधान।
वक्ष उघाड़े घूमतीं, ज्यों चूड़ैल श्मशान।।०५१२।।

यों तो कहने को हुए, हम स्वतंत्र सुखधाम।
अँग्रेज़ी का है अभी, अपना देश गुलाम।।०५१३।।

राष्ट्रपती भी देश का, है बेबस लाचार।
संसद के आदेश का, कर न सके प्रतिकार।।०५१४।।

आज़ादी के नाम पर, घोटालों की छूट।
स्विस बैंकों में भर रहे, धन जनता का लूट।।०५१५।।

लूट, अपहरण बन गया, भारत में व्यवसाय।
काले धन की रोक का, अब कुछ नहीं उपाय।।०५१६।।

रिश्वत, सुविधाशुल्क के बने नये आयाम।
बिन पैसे होता नहीं, अब कोई भी काम।।०५१७।।

गुण्डागर्दी बढ़ गई, आज़ादी के बाद।
अब गरीब जनता करे, किसके दर फरियाद।।०५१८।।

है स्वतंत्र इस देश में, केवल हाइकमान।
राष्ट्रपती से भी अधिक, शक्ती उसकी जान।।०५१९।।

जागे जनता देश की, हो चरित्र निर्माण।
हो अखण्ड सम्भव तभी, अपना हिन्दुस्तान।।०५२०।।

आज़ादी के बाद से, बदला सारा चित्र।
तब लूटा था, गैर ने, लूट रहे अब मित्र।।०५२१।।

सभी शहीदों को नमन, सबके प्रति आभार।
भूले-बिसरे सभी को, हो प्रणाम स्वीकार।।०५२२।।

हिन्दी के उत्थान को, है कटिबद्ध हितेश।
चाहे कुछ करना पड़े, इसके लिए विशेष।।०५२३।।

सब भाषा में श्रेष्ठ है, हिन्दी का विज्ञान।
अलग-अलग हर शब्द की, है अपनी पहिचान।।०५२४।।

भाषा का है व्याकरण, इसका बड़ा विशाल।
घोष राष्ट्रभाषा करो, हिन्दी को तत्काल।।०५२५।।

हिन्दी का है विश्व में, सबसे अधिक प्रचार।
सर्वाधिक उपयोग में, है हिन्दी स्वीकार।।०५२६।।

हिन्दी सबसे है सरस, सर्वश्रेष्ठ आसान।
क्लिष्ट बनाया गर इसे, खो देगी पहिचान।।०५२७।।

यह अपना दुर्भाग्य है, संसद में सब लोग।
हिन्दी को करते नहीं, इँगलिश करें प्रयोग।।०५२८।।

जनप्रतिनिधि हैं किसलिए जनभाषा से दूर।
इनकी भाषा, भेष क्यों, अँग्रेज़ी में चूर।।०५२९।।

नेतागण हैं आज भी अँग्रेज़ी के दास।
सांसद खुद ही तोड़ते, जनता का विश्वास।।०५३०।।

अँग्रेज़ी में बोलता, जो विदेश में जाय।
जनता उस पर मुकदमा, देशद्रोह का लाय।।०५३१।।

कहा विवेकानन्द ने, गाँधी-नेहरु योग।
सर्वाधिक है विश्व में, हिन्दी का उपयोग।।०५३२।।

प्रबल मातृभाषा सखे, हिन्दी को ही जान।
हिन्दी ही तो विश्व में, भारत की पहिचान।।०५३३।।

अँग्रेज़ी में बोलते, जो नेता श्रीमान।
इस चुनाव में कीजिए, उन्हें नहीं मतदान।।०५३४।।

विश्व रखे हर राष्ट्र की, अपनी भाषा नेक।
सखे राष्ट्रभाषा यहाँ, हुई न घोषित एक।।०५३५।।

जन्म किसी भी देश का, 'माँ' ही पहला बोल।
हिन्दी में उच्चारता, ऊँ आँ शिशु मुँह खोल।।०५३६।।

जैसे पाकिस्तान में, उर्दू है श्रीमान।
हिन्दी होनी चाहिए, भारत की पहिचान।।०५३७।।

हिन्दी-उर्दू बहन हैं, दोउ एक सी श्रेष्ठ।
अँग्रेजी तो दासता, की भाषा है नेष्ट।।०५३८।।

ममता और मिठास में, हिन्दी है भरपूर।
अँग्रेज़ी इस भाव से, कोसों मीलों दूर।।०५३९।।

न्यायालय में भी मिले, हिन्दी को पहिचान।
निर्णय हिन्दी में लिखें, न्यायमूर्ति श्रीमान।।०५४०।।

अँग्रेज़ी का अब हटे, भारत से सर्वस्व।
हिन्दी है इस देश की, जनता का वर्चस्व।।०५४१।।

राष्ट्रभाष घोषित करो, हिन्दी को श्रीमान।
तभी बढ़ेगा विश्व में, भारत का सम्मान।।०५४२।।

हिन्दी हिन्दुस्तान में, पूजित मातृ-समान।
सन्तों की भाषा- बसें इसमें ही भगवान।।०५४३।।

गर्वोन्नत हैं राष्ट्र सब, निज भाषा पर मित्र।
भारत में अँग्रेजियत, है दासत्व चरित्र।।०५४४।।

निज भाषा पर जो नहीं, करता है अभिमान।
सकल धरा पर क्या उसे, मिल सकता सम्मान।।०५४५।।

एकसूत्र में बँध सके, अपना हिन्दुस्तान।
जब हो सारे देश की, भाषा एक समान।।०५४६।।

पहले लड़े स्वराज को, हम अँग्रेज विरुद्ध।
निजभाषा हित अब करो, अँग्रेज़ी से युद्ध।।०५४७।।

हिन्दी के हित आज हो, फिर से क्रांति महान।
जागे जनता देश की, जागे हिन्दुस्तान।।०५४८।।

अगर राष्ट्रभाषा सखे, हिन्दी घोषित होय।
भारत पुनः अखण्ड हो, निश्चित यह मत मोय।।०५४९।।

मन, बुद्धी से, ज्ञान से, जो करता सत्कर्म।
सच्चे अर्थो में वही, निभा रहा निज-धर्म।।०५५०।।

मैं कुछ भी करता नहीं, सब करते प्रभु आप।
नाम-मात्र के लिए हैं, मेरे क्रिया-कलाप।।०५५१।।

मूर्ख बुद्धि अज्ञान से, होता विषयासक्त।
मन, बुद्धी संगम करे, प्रभू चरण अनुरक्त।।०५५२।।

कृष्ण कृपा से ही हुआ, रण में विजयी पार्थ।
भीष्म, कर्ण के बाण से, बचा ले गए सार्थ।।०५५३।।

कर्म, फलाफल त्याग कर, कर्म करें जो लोग।
उनको व्यापे ही नहीं, शोक, मोह, मद, भोग।।०५५४।।

प्रभु को अरपण कर करे, अनासक्ति से कर्म।
निसन्देह होता वही, मानव जीवन धर्म।।०५५५।।

अनासक्ति से कर्म हो, प्रभु की इच्छा मान।
जो करता होता वही, मानव श्रेष्ठ महान।।०५५६।।

तर्करहित, श्रद्धासहित जो पूजे श्रीराम।
उसको निश्चित ही मिले, मोक्ष परम सुखधाम।।०५५७।।

जो गृहस्थ कर्त्तव्य को, त्याग ढूँढता सुक्ख।
वह तपसी तापस नहीं, है निज कर्म विमुक्ख।।०५५८।।

अनासक्त पालन करे, निज गृहस्थ परिवार।
उस पर कृपा विशेष नित, करते पालनहार।।०५५९।।

मन चाहा भी मिलेगा, मन से भज हरिनाम।
नहीं अधूरापन रहे, पूरण हों सब काम।।०५६०।।

यात्रा में यात्री सभी, होते नहिं समान।
मेल-जोल उनसे बढ़ा, जिनसे हो पहिचान।।०५६१।।

यात्रा में अनजान से, लेना नहीं प्रसाद।
ऐसा ना हो बाद में, मन में हो अवसाद।।०५६२।।

सावधान रहकर करे, जो यात्रा में ध्यान।
रहे सुरक्षित सर्वदा, स्वयं और सामान।।०५६३।।

अजनबियों से मित्रता, यात्रा बीच निषेध।
यदि सतर्क ना रहा तो, हो सकता है खेद।।०५६४।।

यात्रा में व्यापार का, करें न मन में ध्यान।
सम्मोहन से बच गया, तब ही है कल्यान।।०५६५।।

प्रेम, प्रीत व्यापार का यात्रा में क्या काम।
यात्रा में रह सर्वदा, निर्विकार, निष्काम।।०५६६।।

यात्रा में निजता कभी, प्रकट नहीं हो तात।
बँधती मुट्ठी खुल गई, हो सकती है घात।।०५६७।।

सावधान यदि ना रहा, यदि ना रहा सचेत।
लूट न ले करके कभी, कोई तुझे अचेत।।०५६८।।

पत्नी, बच्चे साथ हैं, और साथ सामान।
इनकी संरक्षा तुझे, करनी है धर ध्यान।।०५६९।।

क्रोध पाप का मूल है, ज्ञान रहित अविवेक।
इस कारण तन, मन जरे, स्वयं और प्रत्येक।।०५७०।।

क्रोधवन्त होकर मनुज, पाप करे घनघोर।
साधु बताये स्वयं को, सबै बतावे चोर।।०५७१।।

क्रोध अगन तन-मन जरे, घर आँगन जर जाए।
सहने वाला भी जरे, कर्ता भी पछताय।।०५७२।।

क्रोधी के व्यवहार से, दुखी रहे परिवार।
दुश्चिन्ता में सब रहें, शंकित हृदय अपार।।०५७३।।

क्रोध त्याग दे, मिलेगा घर-बाहर सत्कार।
क्रोधी को करता नहीं, कोई भी स्वीकार।।०५७४।।

परिजन-पुरजन हो गये, क्रोधी के प्रतिकूल।
कुछ भी तो रहता नहीं, ऐसे में अनुकूल।।०५७५।।

क्रोधी मानव से रहें, परिजन-पुरजन रुष्ट।
ऐसी दूरी राखते, जैसे तन में कुष्ट।।०५७६।।

क्रोधी में रहता सदा, अहंकार का भाव।
कुण्ठित करता बुद्धि को, उसका क्रूर स्वभाव।।०५७७।।

श्रेष्ठ मानता स्वयं को, क्रोधी जन मतिहीन।
अपने मन में स्वयं को, गिनता अधिक प्रवीन।।०५७८।।

बच्चे बूढ़ों से उसे, कभी न मिलता प्यार।
और बढ़ाता दूरियाँ, उसका कटु व्यवहार।।०५७९।।

जो चाहे सत्कार तो, क्रोध करे परित्याग।
सुख-शांती मन में रहे, उपजे प्रेम पराग।।०५८०।।

जीत न पाय्र क्रोध से, कोई भी मन एक।
प्रेमपूर्ण व्यवहार से, जीते हृदय अनेक।।०५८१।।

घृणा उपजती क्रोध से, अहंकार के साथ।
क्रोधी का कोई कभी, नहीं पकड़ता हाथ।।०५८२।।

आज समूचे देश में, है बस यही प्रलाप।
कैसे भ्रष्टाचार का, मित्र मिटेगा ताप।।०५८३।।

खड़ा हो रहा राष्ट्र अब, भ्रष्टाचार विरुद्ध।
सम्भवतः करना पड़े, अपनों से ही युद्ध।।०५८४।।

बदल गये हैं आचरण, बदल गई है बात।
शेष रह गई बनावट, और मिलावट तात।।०५८५।।

सक्रिय आत्माएँ हुईं, दुर्योधन, धृतराष्ट्र।
पुनः अवतरित कृष्ण हों, और सँभालें राष्ट्र।।०५८६।।

जनता जाग्रत हो गई, सर पर चढ़ा जनून।
अब होने देगी नहीं, प्रजातंत्र का खून।।०५८७।।

देश ढोएगा कब तलक, कुछ परिवारी तंत्र।
कब आएगा देश में, जनता का गणतंत्र।।०५८८।।

जागे जनता देश की, जागे हिन्दुस्तान।
धर्म, वर्ग सब भूलकर, एक रहे अभियान।।०५८९।।

सांसद, नेता, मन्तरी और विधायक नेक।
घोटालों में लिप्त हैं, इनमें मित्र अनेक।।०५९०।।

आज देश में चल रही, घोटाला सरकार।
और व्याप्त है देश में, चहुँदिश भ्रष्टाचार।।०५९१।।

जब-जब भी जनता उठी, जागा है जनतन्त्र।
तानाशाही मिटी है, काँपा है इकतन्त्र।।०५९२।।

आवश्यक है देशहित, पुनः क्रांति हो आज।
यह स्वराज काफी नहीं, अब तो मिले सुराज।।०५९३।।

सभी क्षेत्र में व्याप्त हैं, भ्रष्टाचार अनेक।
पर इतना सच मानिए, भ्रष्ट नहीं प्रत्येक।।०५९४।।

आवश्यक है जाँचिए, इनका भी परिवेश।
जो घोटाला कर रहे, धर साधू का वेश।।०५९५।।

मन ही मन भजता रहे, मुँह से बोले नाय।
जब गणना हो पुण्य की, वह आधा ही पाय।।०५९६।।

श्रीपद का वन्दन करे, रहे नहीं श्रीहीन।
दीनानाथ चरण गहे, कबहुँ रहे ना दीन।।०५९७।।

सागर को भी लाँघकर, पर्वत पर चढ़ जाय।
ईश कृपा, विकलाँगता कभी न आड़े आय।।०५९८।।

मैं जो कुछ भी आज हूँ, प्रभु की कृपा विशेष।
प्रभु ने जबसे कर गहा, मैं बन गया हितेश।।०५९९।।

श्रीचरणों में रख दिया, जिसने अपना माथ।
उन्हें लगाते हृदय से, स्वयं द्वारिकानाथ।।०६००।।

कृष्ण कृपा जब तक रही, झुका नहीं गाण्डीव।
राम कृपा थी बालि से जीत गया सुग्रीव।।०६०१।।

वही धनंजय थे वही, धनुष-बाण भी हाथ।
विदुर भूमि अर्जुन लुटा, सखा नहीं थे साथ।।०६०२।।

नाम धनंजय रख मगर, करना मत अभिमान।
कृष्ण कृपा बिन शून्य है, तू बस इतना जान।।०६०३।।

राजनीति के क्षेत्र में, नहीं बनाया बाप।
इसीलिए तुम सह रहे, उपेक्षिता का ताप।।०६०४।।

भीख माँगने से मिले, मुट्ठी भरा अनाज।
स्वयं सिद्ध हो योग्यता, पूजा करे समाज।।०६०५।।

दृढ़ निश्चय मन में लिये, चढ़ो शिखर निष्काम।
एक दिवस हो जायेगा, सकल विश्व में नाम।।०६०६।।

हिम्मत से हारो नहीं, छुटे न मन की आस।
सफल हुआ जो ना बना, परिस्थिती का दास।।०६०७।।

मान लिया है आजकल, परिस्थिती प्रतिकूल।
लेकिन सतत प्रयास से, होगी ही अनुकूल।।०६०८।।

भवसागर तूफान में, छोड़ो तट का मोह।
जीत सकोगे तुम तभी, लहरों का विद्रोह।।०६०९।।

मन में दृढ़ विश्वास हो, निश्चय सही विचार।
तभी कर सकोगे सखे, तुम सागर को पार।।०६१०।।

कितनी भी आँधी चले, छोड़ न देना राह।
यात्रा में फल नीक दे, लक्ष्य प्राप्ति की चाह।।०६११।।

वीर शिवाजी ने कभी, सखे न मानी हार।
आगे बढ़कर सर्वदा, किया शत्रु पर वार।।०६१२।।

भूखे रहकर भी लड़े, राणा वीर प्रताप।
मुगलों के साम्राज्य को, दिया घोर संताप।।०६१३।।

झाँसी की रानी सहित, ऐसे वीर अनाम।
हर उत्सव पर उन्हें भी करिये मित्र प्रनाम।।०६१४।।

पड़ा-पड़ा आलस्य में, करता यही विचार।
किसी तरह मम कार्य को, सफल करें करतार।।०६१५।।

कर्म करे ना सोच में, पड़ा रहे दिन-रात।
ऐसा मानुष आलसी, स्वयं बिगाड़े बात।।०६१६।।

अभी उठूँगा करूँगा, पूरे लम्बित काम।
यही सोचता आलसी, पड़ा सुबह से शाम।।०६१७।।

कभी दोष दे भाग्य को, कोसे कभी समाज।
पर अपने आलस्य पर, उसे न आवे लाज।।०६१८।।

दैव-दैव कह आलसी, पड़ा रहे बेकार।
दवा न अपनी कर सके, चाहे हो बीमार।।०६१९।।

लक्ष्य कभी पाता नहीं, आलसिया, मतिहीन।
पल-पल होती ही रहे, उसकी शक्ति क्षीण।।०६२०।।

कभी न आते लौटकर, बीते जो दिन-रात।
नहीं सोचता आलसी, यह छोटी सी बात।।०६२१।।

जोड़-जोड़ कर भर लिए, रत्न स्वर्ण भण्डार।
साथ नहीं पर कुछ गया, छोड़ा जब संसार।।०६२२।।

हाथी घोड़ा पालकी, रहे न कुछ भी हाथ।
अन्त समय सत्कर्म ही, केवल देते साथ।।०६२३।।

इस शरीर के भोग सब, छूटें यहीं हितेश।
साथ आतमा के रहें, तेरे पुण्य विशेष।।०६२४।।

इस पर, उस पर, सभी पर, कर केवल उपकार।
इसके प्रतिफल दें तुझे, शुभाषीश करतार।।०६२५।।

बुरा किया तो बुरा ही, फल पाएगा मित्र।
भला किया तो भला ही, वहाँ बनेगा चित्र।।०६२६।।

अपने भक्तों की करें, भगवन साज-सँवार।
तुलसी, मीरा, सूर सब, प्रभू उतारे पार।।०६२७।।

प्रभूभक्ति अनपायनी, गीता का सन्देश।
तन-मन प्रभु अर्पण करे, पाए कृपा विशेष।।०६२८।।

प्रभु करते हैं सर्वदा उसके पूरण काम।
सोते, उठते, जागते, जो जपता हरिनाम।।०६२९।।

प्रभु की इच्छा के बिना, हिले न कोई पात।
वह चाहें तो जीत हो, वह चाहें तो मात।।०६३०।।

केवल जीवन सत्य है, मृत्यू केवल झूँठ।
जीवन है मधुमास तो, मृत्यु सूखता ठूँठ।।०६३१।।

जीवन मित्र बसन्त है, खिलते नित्य प्रसून।
मृत्यू बंद कपाट-सी चहुँदिश सूना-सून।।०६३२।।

मृत्यू को सच मानते, कहीं-कहीं विद्वान।
जीवन की पर सत्यता, कहीं अधिक श्रीमान।।०६३३।।

जीवन है आरम्भ तो, मृत्यू पूर्ण विराम।
जीवन में सबकुछ मिले, मृत्यू में विश्राम।।०६३४।।

बंद मृत्यु कर देत है, अवसर के सब द्वार।
जीवन है प्रभु भक्ति का, अवसर बारम्बार।।०६३५।।

सत्कर्मों हित मिला है, जीवन तुझे महान।
करने को कुछ ना बचे, मृत्यु के उपरान।।०६३६।।

ज्ञान और विज्ञान में, अनुसंधान विशेष।
जीवन में सम्भव हुए, आविष्कार हितेश।।०६३७।।

मानव जीवन श्रेष्ठ है, सब ग्रंथों का सार।
इस कारण लेते प्रभू, धरती पर अवतार।।०६३८।।

जीवन पुष्प गुलाब का, बाँटे चहुँदिश गंध।
मृत्यू के उपरांत बस, शेष बचे दुर्गन्ध।।०६३९।।

मृत्यू में है शून्यता, जीवन में है तत्त्व।
इसीलिए वर माँगते, मनुज-दनुज अमरत्व।।०६४०।।

जीवन शाश्वत सत्यता, मृत्यू छल आधार।
मृत्यू केवल दण्ड है, जीवन है उपहार।।०६४१।।

जीवन लौकिक सुखों का, भरा हुआ घट एक।
मृत्यू करती सर्वदा, जीवन घट में छेक।।०६४२।।

जीवन दृढ़ विश्वास है, मृत्यू टूटी आस।
मृत्यू गति को रोकती, जीवन करे विकास।।०६४३।।

जीवन सत्य इसीलिए, देख रहे हर दृश्य।
मृत्यू कोरा झूठ है, रहती सदा अदृश्य।।०६४४।।

निज आँखों से देखता, जीवन में जो होय।
स्वयं मृत्यु को आज तक, देख न पाया कोय।।०६४५।।

इसीलिए मैं मानता, जीवन सत्य हितेश।
मृत्यू के उपरांत बस, मिट्टी बचती शेष।।०६४६।।

जब अनबन होती दिखे, तब-तब धारे मौन।
चुप रहना ही श्रेष्ठ है, सुलह-सफाई गौन।।०६४७।।

चींटी को मत मानिये, छोटी या असहाय।
हाथी जैसा जीव भी, चींटी से भय-खाय।।०६४८।।

होय उपेक्षा गेह में, बाहर पूछ न होय।
असम्मान की जिन्दगी, व्यर्थ कहे हर कोय।।०६४९।।

शत्रू को मत मानिये, अपने से कमजोर।
छुप करते हैं वार यह, शत्रू, दुर्दिन, चोर।।०६५०।।

ढोंगी, पाखण्डी गुरू, सबको देते सीख।
इनके चंगुल में फँसा, प्राणी माँगे भीख।।०६५१।।

मूरख से मत मित्रता, करना कभी हितेश।
पछताने के लिए भी, नहीं बचेगा शेष।।०६५२।।

कर साँपों से मित्रता, रह भूतों के पास।
लेकिन मूरख मित्र पर, करना मत विश्वास।।०६५३।।

मूरख की हर बात को, ज्ञान कसौटी तोल।
अनायास मत मानिये, उसके मीठे बोल।।०६५४।।

दिखता मूरख को नहीं, समतल-दलदल फर्क।
मदिरा को भी समझता, वह गुलाब का अर्क।।०६५५।।

चोर-उचक्कों, लुटेरों, के हो हाथ कमान।
निश्चित ही उस देश में, होती क्रांति महान।।०६५६।।

बनता है मानव सदा, निज विचार अनुकूल।
मनोभाव अनुसार ही, जीवन पाये कूल।।०६५७।।

विज्ञापन जिस वस्तु का, कुछ करोड़ में होय।
गुणवत्ता में श्रेष्ठ वह, क्या आवश्यक होय।।०६५८।।

जिनको निज कर्त्तव्य का, दायित्वों का ध्यान।
उनके घर आँगन बसें, स्वयं कृष्ण भगवान।।०६५९।।

पति के गृह को त्याग कर, आश्रम रहने जाय।
ऐसी नार समाज में, भली नहीं कहलाय।।०६६०।।

पत्नी पूर्ण समर्पिता, बच्चे आज्ञाकार।
आश्रम में क्यों जाइये, तजकर घर-परिवार।।०६६१।।

तथाकथित गुरु पद गहे, पति की पद रज त्याग।
ऐसी नार कुनार का, सो जाता है भाग।।०६६२।।

भगवा कपड़े पहनकर, धर साधू का वेश।
कर्त्तव्यों से भागते, घूमे देश-विदेश।।०६६३।।

करें प्रभावित सभी को, पति-पत्नी संबंध।
बच्चे-बूढ़े सभी तक, पहुँचे गन्ध-सुगन्ध।।०६६४।।

समय पड़े पर जो खड़े, कर दे अपने हाथ।
जीवन यात्रा में कभी, करें न उसका साथ।।०६६५।।

पति-पत्नी के बीच में, क्या शंका का काम।
संदेहों ने कर दिये, जीवन कई तमाम।।०६६६।।

जब-जब सपने उच्च हों, ऊँची होय उड़ान।
जितने ऊँची कल्पना, उतना ही उत्थान।।०६६७।।

आपस की हर समस्या, मिलकर लो सुल्टाय।
पड़ा तीसरा बीच में, उल्टा दे उलझाय।।०६६८।।

पति-पत्नी वह श्रेष्ठ, जो करें न कटु संवाद।
एक कहे दूजा सुने, होय न वाद विवाद।।०६६९।।

किसकी कह किसकी सुने, मन महु राख विचार।
कुछ ना कह कुछ मत सुने जो चाहे सत्कार।।०६७०।।

सुनी-सुनाई बात पर कभी न देना ध्यान।
आँखों देखी बात ही, सच की है पहचान।।०६७१।।

विज्ञापन जिसका करें, ले करोड़ श्रीमान।
गुणवत्ता से वस्तु वह, स्वयं सिद्ध अनजान।।०६७२।।

कैसे हो अब देश में, हिन्दी की पहचान।
हिन्दीभाषी वह नहीं, जिसके हाथ कमान।।०६७३।।

रावण पर बनने लगीं, फिल्में आज महान।
रावण के किरदार को, निभा रहा इन्सान।।०६७४।।

घोर कुशासन हो रहा, दुःशासन का राज।
पार्थसारथी प्रकट हो, बचे धर्म की लाज।।०६७५।।

माँ ममता के सामने, जीत सके ना कोय।
सुत पर हमला हो अगर, माँ रणचण्डी होय।।०६७६।।

हार-जीत का चिह्न है, ऐसा मन में धार।
हारा हार न पहनता, गले जीत के हार।।०६७७।।

बहू-बेटियों में जहाँ, हो समान व्यवहार।
उस घर पर श्रीराम की, रहती कृपा अपार।।०६७८।।

राजनीति में चल रहा, प्रजातंत्र में द्यूत।
पूजनीय मंत्री बने, माननीय है पूत।।०६७९।।

कार चली श्रीमान की, पी मदिरा भरपूर।
कुचला एक गरीब को, करी गरीबी दूर।।०६८०।।

भूख, गरीबी किसी के, ना फटकेगी पास।
इस चुनाव में फिर करो, तुम मुझ पर विश्वास।।०६८१।।

अवसरवादी हो गये, सारे सत्तासीन।
गुणवन्ता इस देश के, सारे तेरह तीन।।०६८२।।

जिसके मन विश्वास दृढ़, हो निश्चय के साथ।
सूत्र सफलता के सभी, रहते उसके हाथ।।०६८३।।

बात कहें संक्षेप में, किन्तु भरा हो सार।
लम्बा भाषण व्यर्थ है, यदि हो वह निस्सार।।०६८४।।

कैसे हिन्दी राष्ट्र की, भाषा हो श्रीमान।
जब हिन्दी भाषी नहीं, मनतरी श्री प्रधान।।०६८५।।

स्वर्गराज या मोक्ष की, मुझे न किंचित चाह।
इच्छा है चलता रहूँ, सत्कर्मों की राह।।०६८६।।

पत्नी सुख, सन्तान सुख, मित्रों में सम्मान।
कठिन तपस्या से मिले, प्रभु का यह वरदान।।०६८७।।

वृद्धावस्था की यही, है हितेश पहचान।
जिसका तीर निकल गया, बाकी रही कमान।।०६८८।।

सब चंचलता खो गई, हुई चपलता दूर।
निगल गया यौवन सबै, कालसर्प अति क्रूर।।०६८९।।

ऊँचे सपने देखिए, रखिए उच्च विचार।
तभी मिलेगी सफलता, निज गृहमन्दिर, द्वार।।०६९०।।

ऊँची महत्वाकांक्षा, ऊँची होय उड़ान।
चढ़ जाता वह शिखर पर, बनती है पहचान।।०६९१।।

सन्तोषी व्यक्ति कभी, करे न सागर पार।
असन्तोष से जन्मते, नित नव आविष्कार।।०६९२।।

जिसके मन सपने नहीं, बैठ रहे मन मार।
परिजन-पुरजन मित्र के, कभी न साजै कार।।०६९३।।

जहाँ न साहस कल्पना, डरपे लख मझधार।
दृढ़ निश्चय विश्वास ही, उतरे सागर पार।।०६९४।।

निष्क्रिय रहता है सदा, जिसके मन सन्तोष।
उसको महत्वाकांक्षा, से मिलता अनुतोष।।०६९५।।

मन में दृढ़ संकल्प हो, कुछ करने की चाह।
वन्दनीय उस व्यक्ति का, होता है उत्साह।।०६९६।।

चाँद देखता चाँद को, चाँद गया शरमाय।
चाँद हुए दो किस तरह मुझे सखी समझाय।।०६९७।।

समय देखकर जो कहे, समय सुहाती बात।
उसके जीवन में कभी, नहीं अँधेरी रात।।०६९८।।

कभी नाव गाड़ी चढ़ें, कभी गाड़ियाँ नाव।
मत इतराना धूप री, पीछे-पीछे छाँव।।०६९९।।

अबला की मत हाय ले, देवे अंग जराय।
मरे बैल की धौंकनी, ज्यों लोहा पिघलाय।।०७००।।

बदला है हर कर्म का, हार जीत का खेल।
अपने कर्मों से मिलें, सिंहासन या जेल।।०७०१।।

मानव बनकर क्यों करें, पशु-पक्षी से कर्म।
भोजन, भय, मैथुन नहीं, केवल मानव धर्म।।०७०२।।

बात, बात, की बात है, बात बात में बात।
बिगड़ जाय तो रोक दे, वहीं जहाँ हो बात।।०७०३।।

राजनीति की प्रीति में मीत न हो हलकान।
यह तो ऐसी कमलिनी, पिये भ्रमर के प्रान।।०७०४।।

नयन, नयन वह नयन है जिसमें नयन समाय।
नयन वही बेजोड़ जो नयन मिले झुक जाय।।०७०५।।

जिन नयनों का खो गया, नीर पीर संज्ञान।
सुन हितेश ऐसे नयन, बिना प्राण के जान।।०७०६।।

जंगल सारे कट गये, कहाँ जाय गजराज।
इसीलिए हर शहर में, आया जंगलराज।।०७०७।।

हरे भरे वन कट गये, नंगे हुए पहाड़।
आज खा रही खेत को, स्वयम् खेत की बाड़।।०७०८।।

जनसंख्या बढ़ती रही, बनते रहे मकान।
कहाँ बचेंगे खेत फिर, कहाँ उगेगा धान।।०७०९।।

वृक्ष कटे पक्षी उड़े चहुँदिशि बने मकान।
अब शिकार को शेर के बाँधें कहाँ मचान।।०७१०।।

सत्य वचन कह प्रेम से पुनि-पुनि कहे विचार।
सत्कर्मों से श्रेष्ठ है जग में सद्व्यवहार।।०७११।।

नाव तैरती काठ की, लोहा तिरता साथ।
राम कृपा ते हो गये, लंक विभीषण नाथ।।०७१२।।

बड़े हुए तो कर चलो, नेक बड़ाई काम।
जैसे सूरज बाँटता, अपनी धूप तमाम।।०७१३।।

कंचन से अनमोल है, माटी कह दूँ तोय।
माटी गोद सुलाइ है, मीत न कंचन होय।।०७१४।।

साधु पाखण्डी बने, करन लगे व्यापार।
धर्म और उपदेश का, लगा रहे बाजार।।०७१५।।

पुत्र वधू का चैन क्यों रही बाबरी छीन।
विधना करे न पुत्रियाँ, बनें दुखी या दीन।।०७१६।।

बिना लड़े ही हारकर, बैठा जो बलहीन।
बना घृणा का पात्र वह, कहलाया अतिदीन।।०७१७।।

चढ़े हिमालय वही जो, करता रहे प्रयास।
लक्ष्य प्राप्ति की चाहना, मन में दृढ़ विश्वास ।।०७१८।।

शिथिल हुआ तन किन्तु, है मन पर नहीं प्रभाव।
इच्छाओं को अभी तक, मिला नहीं ठहराव।।०७१९।।

चक्रवर्ति सम्राट का, भाग्य चार सुत होय।
अंत समय पर पास में, हाथ न पाया कोय।।०७२०।।

ईश्वर ने जो रच दिए, आँख, नाक या कान।
बना ना पाया आज तक, कृत्रिम यह इंसान।।०७२१।।

निर्धन पर होती नहीं वेश्या कभी उदार।
वह पैसे की मीत है, धन से उसको प्यार।।०७२२।।

कुंती सुत था कर्ण भी, अर्जुन से बलवान।
किंतु कुसंगति खा गई प्राण, मान-सम्मान।।०७२३।।

ईश्वर भक्ती से बहिर, नहीं कहीं कुछ मित्र।
रोग शोक संकट कटे, मन भी रहे पवित्र।।०७२४।।

इस विचित्र संसार में, है विचित्र व्यवहार।
वेश्या, रेलें, सिनेमा करते नहीं उधार।।०७२५।।

सासू बनकर बहू से मत कर दुर्व्यवहार।
माँ की ममता दे उसे, बने स्वर्ग संसार।।०७२६।।

पुत्र वधू को देखकर, मत बिचकाओ होठ।
कहीं निकलने ना लगे, निज बेटी में खोट।।०७२७।।

पुत्र वधू को बाबरी निज पुत्री सा मान।
घर में सब सुख चैन हो जग भी दे सम्मान।।०७२८।।

वन कटते सूखे गये, सावन, भादो, षाढ़।
ऋतुएँ नियमित ना रहीं, बरखा लगे किवाड़।।०७२९।।

प्रेम पगे मीठे वचन, कहिये सत्य विचार।
झूठ जनक अपमान का, सच्चा सुखी अपार।।०७३०।।

हँसी कह कहे खो गया जबसे उपजा क्रोध।
समय-समय पर गुनी जन यही कराते बोध।।०७३१।।

आत्मा मरती ही नहीं मिटता सिर्फ शरीर।
सोकर, जागा, प्राणि ज्यों बदले अपना चीर।।०७३२।।

जाग रहा जो आदि से, सूरज चन्द्र समान।
वही नियंत्रित कर रहा, यह सम्पूर्ण विधान।।०७३३।।

पुत्रवधू जल कर मरी, कारण बना दहेज।
परिजन पुरजन भी करें मिलने से परहेज।।०७३४।।

पुत्र, पुत्रवधु बीच में मत ना बन दीवार।
सब समाज थू-थू करे तुझ पर बारम्बार।।०७३५।।

माँ है! ममतामयी बन, सबके मन को जीत।
जितना प्यार लुटायगी, उतने होंगे मीत।।०७३६।।

पुत्र दुखी पोता दुखी, दुखी पूज्य भरतार।
पुत्रवधू अति की दुखी, धन्य कर्कशानार।।०७३७।।

सबसे सद्व्यवहार कर, मीठे बोल सुनाम।
है ईश्वर भक्ती यही, भले कहे मत राम।।०७३८।।

पुत्र वधू की सेज पर, मती बिछावे शूल।
क्या होगा यदि हो गया, जामाता प्रतिकूल।।०७३९।।

भले तुझे कुण्ठा रही, भले मिले दुख तोय।
तेरी इसमें शान है, तुझसे दुखी न कोय।।०७४०।।

अहंकार तज बाबरे, व्यापे शोक न रोग।
चहुँदिशि तेरी प्रशंसा, करें सराहें लोग।।०७४१।।

किस पर मान गुमान है यौवन, धन, परिवार।
सभी धरा रह जायेगा जब तन होगा छार।।०७४२।।

चुप देखे अन्याय जो, लगे उसे भी पाप।
अंधे राजा को लगा ज्यों द्रोपदि का शाप।।०७४३।।

मन मिलने की बात है मन में मन का मीत।
मन चाहा यदि चाहिये मन से उनको जीत।।०७४४।।

जिसकी गोदी खेल कर, सीखे जीवन राग।
अंत समय उस पिता को, पुत्र लगाये आग।।०७४५।।

मर जाये यदि जीव तो, पुनर्जन्म की आस।
पर हितेश जुड़ता नहीं, टूटे जब विश्वास।।०७४६।।

सूती धागों की तरह प्रेम प्रीत व्यवहार।
टूटे से फिर ना जुड़े गाँठ लगा लो चार।।०७४७।।

दुर्दिन देखे ही नहीं, हुआ नहीं मजबूर।
जो हितेश समझा नहीं, मँजिल कितनी दूर।।०७४८।।

दीप दिवाली, दशहरा, होली से त्यौहार।
खाली जेब हितेश है, सूना सा संसार।।०७४९।।

जिसके पैर बिवाइयाँ, फटीं, हुई ना पीर।
वो हितेश कहता फिरे सबसे रखना धीर।।०७५०।।

कल तक थे अपने सभी मीत कभी पहचान।
वक्त पड़ा तो हो गये सब हितेश अनजान।।०७५१।।

खाली हाथ हितेश का मुस्काना भी ऐब।
शौक सभी दुष्कर्म हैं अगर भरी है जेब।।०७५२।।

होली के सौ रंग हैं, होनी है बदरंग।
होली कभी न खेलना अनहोनी के संग।।०७५३।।

आतंकी मर जायँगे, कीजे सतत् प्रहार।
अधिक समय रहता नहीं, जीवित भ्रष्टाचार।।०७५४।।

सरल नहीं पहचानना कुटिल मित्र मुस्कान।
पर हितेश इस बिन्दु पर अंतर्मन की मान।।०७५५।।

शब्द चयन क्या खूब है तुक अतुकांत हितेश।
तुमने जब जब कुछ कहा दोहा बना विशेष।।०७५६।।

बच्चे सीख न मानते पिता हुआ मजबूर।
धन के बिना हितेश हैं सारे रिश्ते दूर।।०७५७।।

जब तक तू देता रहा तू था प्रभु का रूप।
खाली जेब हितेश अब बना जेठ की धूप।।०७५८।।

मात-पिता, पत्नी, सखा, पुत्र-पुत्रियाँ भ्रात।
खीर हितेश खिलाय तो कहलायेगा तात।।०७५९।।

उत्तम उसके काम हैं उत्तम उसका नाम।
जो हितेश समरथ यहाँ जिसके पल्ले दाम।।०७६०।।

जहाँ पीड़ देने लगे, मीत प्रीत व्यवहार।
फिर हितेश मत जाइयो, उस घर चौखट द्वार।।०७६१।।

दर्पण झूठ न बोलता, पूँछ मिलाकर नैन।
सच आएगा सामने, मत हितेश कर बैन।।०७६२।।

ज्यों हितेश साया छिपा अँधियारों के बीच।
लहरों के षड्यंत्र से हुई किनारे कीच।।०७६३।।

विष पी शिव बनकर सखे, गंग जटा में धार।
फिर हितेश लगने लगे नश्वर सब संसार।।०७६४।।

करे उपेक्षा नाथ की मन में हो कुविचार।
गौरी साजे पिता घर हो हितेश तन छार।।०७६५।।

मिले सफलता उसी को, जिसका दृढ़ विश्वास।
पर्वत को भी लाँघ ले, अविरल सतत् प्रयास।।०७६६।।

निश्चित समझी आज तक, मेरी बुद्धी अल्प।
ईश्वर का इस धरा पर, कोई नहीं विकल्प।।०७६७।।

बार-बार गजराज की, टक्कर लगे विशाल।
बड़े-बड़े वट वृक्ष भी, गिर जाएँ तत्काल।।०७६८।।

भ्रष्टाचार विरोध में, कीजे सतत् प्रयास।
एक दिवस यह मिटेगा, ऐसा है विश्वास।।०७६९।।

जंग लेखनी को लगा, हुई भावना कुन्द।
छाई जब साहित्य पर, राजनीति की धुन्द।।०७७०।।

राजा के दरबार में, उन्हें मिला सम्मान।
नव कविता जिसने लिखी, बिना छन्द, लय, गान।।०७७१।।

पद्मश्री उसको मिली, जिसकी लाम्बी पूँछ।
पहुँच पूछ जिसकी नहीं, उसके हिस्से छूँच।।०७७२।।

काले धन का लगाया, श्री चरणों में भोग।
महामूर्ख भी पा गया, पद्मश्री का योग।।०७७३।।

श्रेष्ठ गुणी जन शीर्ष पर, राज कर रहे नीच।
जैसे रजिया फँस गई, हो गुण्डों के बीच।।०७७४।।

अन्धे राजा पर हुआ, गांधारी का राज।
डूब गया सुत मोह में, कौरव-कुली-जहाज।।०७७५।।

बच्चों पर मत व्यंग्य की, भाषा बोल हितेश।
उनका मुख यदि खुल गया, बढ़ जाएगा क्लेश।।०७७६।।

मत कटाक्ष कर किसी पर, मत कर कडुवे बैन।
जो बोले औ' जो सुने, रहें सभी बेचैन।।०७७७।।

एक-एक क्षण का करो, सद्उपयोग विशेष।
चूक गए तो बचेगा, समय न तुम पर शेष।।०७७८।।

नशा नाश का मूल है, कर दे सब कुछ ध्वस्त।
नशाग्रस्त हर व्यक्ति का, रहता सूरज अस्त।।०७७९।।

रिश्ते-नाते भूलकर, बन जाता अनजान।
सब सम्बन्ध नकारता, नशाग्रस्त इन्सान।।०७८०।।

विचलित हुआ न हार से, जो अपनी श्रीमान।
रहा निरन्तर युद्धरत, योद्धा बना महान।।०७८१।।

मय से उपजे मैं, करे ज्ञान-बुद्धि निर्मूल।
मादकता वशिभूत मन, जाता सब कुछ भूल।।०७८२।।

आपद् में आये नहीं, कभी पूछने हाल।
ऐसे मित्र अमित्र पर, सखे राख ही डाल।।०७८३।।

अनगिन रोगी रोग जन, देखत मन अकुलाय।
दुख सागर उभरे वहीं, जा प्रभु कृपा अघाय।।०७८४।।

पतीव्रता के पाहने, भ्रात, बहन, भरतार।
शेष पुरुष सम्बन्ध सब, करें कलंकित नार।।०७८५।।

दुर्दिन यदि आवत नहीं, भाई-मित्र हितेश।
तो बहना इनसे करो, सब संबंध अशेष।।०७८६।।

अपने दुख को भूलकर परदुख में जो साथ।
उसका काज संवारते, स्वयं जगत के नाथ।।०७८७।।

माँ ममता की धार है, घोर हलाहल बीच।
जब-जब सूखे पुत्र मुख, ममता देती सींच।।०७८८।।

मन से मन की बात कर, मन में मन की राख।
बात अगर मन की खुली, गिर जायेगी साख।।०७८९।।

बरखा में परखा गया, पुल कल बना विशाल।
प्रथम बाढ़ में पी गयी, जल की एक उछाल।।०७९०।।

कुष्ठ रोग मत मानिए, यह जीवन का भोग।
हैं हितेश सुख-दुख सभी, नक्षत्रों के योग।।०७९१।।

कुलटा चाहे राम से, पति परदेस बसाय।
मन का मीत बुलाय के, तीज-तिव्हार मनाय।।०७९२।।

चन्द्रमुखी चंदन बदन, क्षीण कटी मृगनैन।
देखत मन हर्षित भया, लुकत हृदय बेचैन।।०७९३।।

मित्र घात पत्नी दगा, पुत्र बने अनजान।
भाई बँटवारा चहे, कलियुग आया जान।।०७९४।।

गुरु पूजे गोविन्द मिले, गोविन्दा गुरु नाहिं।
असमंजस में मन पड़ा, कित चरणन अवगाहिं।।०७९५।।

वीर पत्नि लेकर चली, काँधे पति की देह।
जो शहीद हो युद्ध में, लौटा था कल गेह।।०७९६।।

डूब गया वह नाव में, जिसके मन कुविचार।
श्रेष्ठ वचन, मन, कर्म से, उतरे सागर पार।।०७९७।।

सबके अवगुण बाँचता, निर्बुद्धी अज्ञान।
आप स्वयं को खोजते, सद्‌बुद्धी विद्वान।।०७९८।।

मेरी माँ सो कह दियो, जब भी तू घर जाय।
गोली खाई वक्ष पर, दूध लजाया नाय।।०७९९।।

प्राणनाथ में प्राण हैं, विष दें या विश्वास।
विष पीकर मीरा भई, और श्याम के पास।।०८००।।

काम क्रोध औ' वासना, उपज नशे की जान।
मर्यादाएँ भूलता, मन, कर मदिरा पान।।०८०१।।

मित्र-मित्र वह मित्र है, सुने मित्र की पीर।
अपने दुख को भूलकर, भरे नयन में नीर।।०८०२।।

भारी से दिन काट ले, चुपके होके बैठ।
जब दिन नीके आ फिरें, तब कीजे घुसपैठ।।०८०३।।

शतक अधूरा रह गया, रहा अधूरा मैच।
स्वयं विधाता ने लिया, काका जी का कैच।।०८०४।।

सम्बन्धों की गेंद को, मत ना अधिक दबाय।
निकस पाँव की दाब से, लगे न मुँह पर आय।।०८०५।।

नहीं अकारण खींचना, सम्बन्धों की डोर।
टूट गाँठ पड़ाएगी, नहीं जुड़ेंगे छोर।।०८०६।।

महल दुमहिले हो गए, खण्डर औ' वीरान।
इस मदिरा के पात्र में, डूब गए जलयान ।।०८०७।।

भौतिक-आध्यात्मिक-सभी, सुख कर देता नाश।
धन-सम्पद, सुख-शान्ति का, करता नशा विनाश।।०८०८।।

इन्द्रधनुष के साथ में, बादल खेले फाग।
धीरे-धीरे जागता, अंग मिलन का राग।।०८०९।।

अपनी भूल हरेक को, अनुभव कहते लोग।
ऐसे सज्जन वृंद पर, हर्ष करें या सोग।।०८१०।।

पूज्य पिता भूखे मरे, अन्धकार के बीच।
दसवाँ, तेहरि पर सभी, रहे मलाई खींच।।०८११।।

सूखा पड़ते रो पड़े, माली और किसान।
वर्षा भई कुम्हार के, सूख रहे हैं प्रान।।०८१२।।

चलते ही अपशकुन हो, पत्नी करे विरोध।
सुन हितेश उस कार्य में, सदा परे गतिरोध।।०८१३।।

पद पाकर बौरा गया, भूल गया कर्त्तव्य।
सुन हितेश उस व्यक्ति को, मिले नहीं गंतव्य।।०८१४।।

होली पिय परेदस में, उठे हृदय में हूक।
कोई बाट निहारता, घर में बैठा मूक।।०८१५।।

गज भर लम्बे खेत में, डाला मन भर बीज।
अपने कर्म खराब तो, क्यों हितेश फिर खीज।।०८१६।।

उसे न अपना तू समझ, वह शत्रू का बाप।
जो हितेश हरषे नहीं, सुन तेरी पदचाप।।०८१७।।

मंजिल चूमेगी तभी, आकर तेरे पाँव।
जब हितेश बाँधे नहीं, तुझको कोई ठाँव।।०८१८।।

व्यथा-कथा सुन बावरे उनकी जो हैं मौन।
उचित नहीं यह जानना, इनमें अपना कौन।।०८१९।।

अगर तुझे पहचानता कभी न करता प्रीत।
अब हितेश रोते हुए, रहे रात-दिन बीत।।०८२०।।

इतना ऊँचा मत बनो, दीखें बौने लोग।
ऊँच-नीच तो है सखे, समय-समय का योग।।०८२१।।

रंग रूप के कारणे कोई नहीं महान।
सब ईश्वर के रूप हैं, सबके सब इन्सान।।०८२२।।

अपना-अपना भाग्य है, अपना-अपना कर्म।
वही सुखी जो जानता, सुन हितेश यह मर्म।।०८२३।।

राजा रंक फकीर सब हैं, ईश्वर के रूप।
सबै एक सी भूख है, सबै एक सी धूप।।०८२४।।

दाता के घर देर है, जरा नहीं अन्धेर।
आपतकाल हितेश तू उसे हृदय से टेर।।०८२५।।

चोरी करके तोड़ के, या फल खावे छीन।
उस फल में कीड़ा बने, वह मानव मतिहीन।।०८२६।।

बनी हुई थी बात जब, मित्र बना संसार।
बात बिगड़ती जानकर, शत्रू हुए हजार।।०८२७।।

पुर्नजन्म इक सत्य है, चौरासी लख योनि।
कर्मों के आधार पर, मिले सभी को जोनि।।०८२८।।

जिसके जैसे कर्म हैं, जिसके जैसे पाप।
इसी जन्म में भोगता, मनु सारे संताप।।०८२९।।

राम नाम उलटा जपा, वाल्मीकि भये सन्त।
सीधा जपते पावते स्वर्गिक भोग अनंत।।०८३०।।

सत्कर्मों से मिली है, मानव देह सुजान।
दुश्कर्मों को त्याग दे, यदि चाहे कल्यान।।०८३१।।

खुलकर बरसे गगन तो, बिहँसे बाग-तड़ाग।
झूमे वृक्ष पलाश का, जनता खेले फाग।।०८३२।।

वर्षा हो तो खिल उठे, खेत और खलिहान।
बिन बरखा सब सून है, रोये ग्राम किसान।।०८३३।।

निज नगरी में ही पुजे, राजा या धनवान।
किन्तु गुणी जन का करे, सकल विश्व सम्मान।।०८३४।।

जैसे जल की हर लहर, जल में रहे विलीन।
जड़, चेतन मानव सभी, होते प्रभु में लीन।।०८३५।।

युवा रहे तब की नहीं, यौवन की परवाह।
वृद्ध हुए तो कर रहे, नित यौवन की चाह।।०८३६।।

तन, मन, धन सबकुछ दिया, दोनों हाथ लुटाय।
जर्जर तन-धनहीन मन, जीव रहा पछताय।।०८३७।।

पत्नी का सुख छोड़कर, वेश्याओं में सोय।
ऐसा मानुष क्षणिक सुख, में तन,मन,धन खोय।।०८४७।।

पत्नी रोता छोड़कर, परनारी संग खेल।
ऐसा व्यक्ती उमर-भर, जिये रुग्णता झेल।।०८४८।।

क्षण-प्रतिक्षण हम कर रहे, आविष्कार हितेश।
संहारक शस्त्रार्थ की क्षमता बने विशेष।।०८४९।।

कभी संगठित ना हुए, सज्जन श्रेष्ठ सुजान।
अपने-अपने कर्मरत व्यस्त रहे श्रीमान।।०८५०।।

हुए संगठित देश में, गुण्डे, चोर, लुँगाड़।
राजनीति के क्षेत्र में, रहे हैं झण्डे गाड़।।०८५१।।

लूट रहे हैं देश को, चन्द संगठित लोग।
पूर्व जन्म के पुण्य का, है सम्भवतः योग।।०८५२।।

गुरू सिंह के पुत्रगण, जिसने चिने दिवार।
उसके वंशज देश में, पूज रही सरकार।।०८५३।।

वाणी औ' व्यवहार में, अन्तर जहाँ न होय।
पुरुषोत्तम वह पुरुष है, कुछ संदेह न मोय।।०८५४।।

दुखी अगर हो मित्र तब, उसका दुख पहचान।
हर सम्भव उद्योग कर, दे उसको मुस्कान।।०८५५।।

सत्य सनातन जगत में, है केवल करतार।
जो जड़, चेतन जीव को, रचता बहुत प्रकार।।०८३८।।

जीवन कुछ ऐसे, जिओ ज्यों महुआ का फूल।
मृत्यू के उपरांत भी, लोग सकें ना भूल।।०८३९।।

नींद न आवे रात में, तब ले हरि का नाम।
चिन्ताएँ सब दूर हों, मन पाए विश्राम।।०८४०।।

संग साथ में जब चलो, सुनो सभी की तात।
मत समझो तुम श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठ तुम्हारी बात।।०८४१।।

जलवायु और धूप को, सके न मुट्ठी भींच।
यह प्रभु का वरदान हैं, तन-मन इनसे सींच।।०८४२।।

सही समय निर्णय सही, लेता यदि चौहान।
गौरी के फिर हाथ से, क्यों होता अपमान।।०८४३।।

चन्द्रग्रहण को देखने, निकले अनगिन रूप।
लगा कि जैसे रात में, निकल रही है धूप।।०८४४।।

पड़े जेल में लड़ रहे, बाहूबली चुनाव।
सुथरी-छवि, व्यक्तित्व का, शायद हुआ अभाव।।०८४५।।

चन्द्र ग्रहण के प्रश्न पर, जनता सोचे मौन।
सूरज के औ' चाँद के बीच आ गया कौन।।०८४६।।

पत्नी का सुख छोड़कर, वेश्याओं में सोय।
ऐसा मानुष क्षणिक सुख, में तन,मन,धन खोय।।०८४७।।

पत्नी रोता छोड़कर, परनारी संग खेल।
ऐसा व्यक्ती उमर-भर, जिये रुग्णता झेल।।०८४८।।

क्षण-प्रतिक्षण हम कर रहे, आविष्कार हितेश।
संहारक शस्त्रार्थ की क्षमता बने विशेष।।०८४९।।

कभी संगठित ना हुए, सज्जन श्रेष्ठ सुजान।
अपने-अपने कर्मरत व्यस्त रहे श्रीमान।।०८५०।।

हुए संगठित देश में, गुण्डे, चोर, लुँगाड़।
राजनीति के क्षेत्र में, रहे हैं झण्डे गाड़।।०८५१।।

लूट रहे हैं देश को, चन्द संगठित लोग।
पूर्व जन्म के पुण्य का, है सम्भवतः योग।।०८५२।।

गुरू सिंह के पुत्रगण, जिसने चिने दिवार।
उसके वंशज देश में, पूज रही सरकार।।०८५३।।

वाणी औ' व्यवहार में, अन्तर जहाँ न होय।
पुरुषोत्तम वह पुरुष है, कुछ संदेह न मोय।।०८५४।।

दुखी अगर हो मित्र तब, उसका दुख पहचान।
हर सम्भव उद्योग कर, दे उसको मुस्कान।।०८५५।।

पहले घर–परिवार था, परिजन रहे अनेक।
अब हर घर हैं मात्र दो, उनके दो या एक।।०८५६।।

खद्दरधारी देश के, बनते ठेकेदार।
देश खोखला कर रहे– अपने दो के चार।।०८५७।।

पढ़ना-लिखना व्यर्थ है, नेता बन जा यार।
अफसर बन क्या करेगा, बन संसद सरकार।।०८५८।।

एक कहे दूजा सुने, सुख बरसे घर माहिं।
इक दूजे की बात को, काटे क्लेश उठाहिं।।०८५९।।

समय अगर बलवान हो, निर्णय बहुत सटीक।
तब अपने गन्तव्य तक, बन जाती है लीक।।०८६०।।

असफलता से दुखी हो, छोड़े नहीं प्रयास।
जीवन में हर सफलता, रहती उसके पास।।०८६१।।

तव अतीत है बावरे, अनुभव का भण्डार।
वर्तमान की सफलता, का सुन्दर आधार।।०८६२।।

अपने सपनों में सजा, उत्साहों के रंग।
तब ही तुझको आयगा, सुख जीवन का ढंग।।०८६३।।

जीवन जीने की कला, मित्र गया जो सीख।
उसके जीवन में कमी, सुख की पड़े न दीख।।०८६४।।

आत्मज्ञान, अनुभूतियाँ, आत्मानन्द प्रमान।
क्यों आया तू जगत में, पहले यह पहचान।।०८६५।।

तू ईश्वर का अंश है, ईश्वर का वरदान।
वह कर जो ईश्वर कहे, यही सत्य का ज्ञान।।०८६६।।

आत्मा की आवाज ही, ईश्वर की आवाज।
वही बजाता बावरे, जीवन का यह साज।।०८६७।।

जीवन है यात्रा समझ, मृत्यू है विश्राम।
आदि और आरम्भ पर, मृत्यू पूर्ण विराम।।०८६८।।

जो भी तेरे पास है, उसको सबसे बाँट।
लेने में वह सुख नहीं, जो देने में ठाट।।०८६९।।

ईश्वर ने तुझको दिया– तू उन सबको देय।
जो कुछ मन इच्छा लिए, आवे तेरे गेय।।०८७०।।

ईश्वर आदि अनन्त है, निराकार अविकार।
होता श्रद्धा भक्ति से, लेकिन वह साकार।।०८७१।।

धीरे-धीरे बढ़ रहे, हम अनन्त की ओर।
परमपिता से आतमा, मिलती है जिस छोर।।०८७२।।

जल में ज्यों उठकर लहर, होती वहीं विलीन।
हो जाती जीवातमा, परमपिता में लीन।।०८७३।।

मृत्यू, भय, सम्भोगरत, धन की चाह विशेष।
ऐसा जीवन व्यर्थ है, पशुवत जान हितेश।।०८७४।।

सच्चा मोती जब मिले, उसे तुरत ले हाथ।
बढ़े भाग्य से सत्य सुख, देते हैं श्रीनाथ।।०८७५।।

कठिन प्रतीक्षा की घड़ी, आशंका की खान।
ऐसे में होती सदा, धीरज की पहचान।।०८७६।।

अहंकार औ' क्रोध हैं, दाएँ-बाएँ हाथ।
उसकी मत सम्मत कटे, जिसके दोनों साथ।।०८७७।।

अपनी-अपनी जो कहे, सुने न सबकी बात।
अलग-थलक सबसे रहे, ज्यों केले का पात।।०८७८।।

चाहे दूध पिलाइए, भले दीजिए प्यार।
लेकिन देख सियार को, रुकता नहीं सियार।।०८७९।।

कितना पालो प्रेम से, रखो बहुत पुचकार।
किन्तु नहीं छुटता कभी, अपनो का संसार।।०८८०।।

उस घर कभी न जाइए, जहाँ न श्रद्धा भाव।
वहाँ नहीं सत्कार हो, केवल मिले दुराव।।०८८१।।

ऊँचे-ऊँचे भवन में, कितने नीचे लोग।
अतिथी को दुत्कार कर, खाएँ छप्पन भोग।।०८८२।।

भक्ति भाव से पूजिये, अपने-अपने इष्ट।
मन अभीष्ट तब ही मिले, हो ना कभी अनिष्ट।।०८८३।।

मोती माणिक पहनकर, ना बदले प्रारब्ध।
भाग्य कर्म के मेल से, हो सबकुछ उपलब्ध।।०८८४।।

भाग्य बदल सकते अगर, पन्ना या पुखराज।
तो होता सबसे धनिक, गोताखोर समाज।।०८८५।।

समय पूर्व प्रारब्ध से, अधिक न पाता कोय।
पन्ना, हीरे, मुक्तियाँ भले हि पहने होय।।०८८६।।

कठिन परिश्रम लगन से, हो निष्ठा का मेल।
वह व्यक्ती हर दौड़ में, रहे प्रथम हर खेल।।०८८७।।

मूर्ख समझते सब उसे, जो तन-मन-धन हीन।
कोई नहीं सँभारता, बंजर हुई जमीन।।०८८८।।

धीरे-धीरे आ गया, विगत वर्ष का अन्त।
नवल वर्ष शायद मिलें, प्रिय से आकर कन्त।।०८८९।।

अभिनन्दन कर लें चलो, नए वर्ष का मित्र।
नए वर्ष- शायद बनें, मनभावन से चित्र।।०८९०।।

प्रथम किरण नववर्ष की, धरती छू मुस्काय।
बिहँसे पत्ते, फूल सब, कली-कली बौराय।।०८९१।।

सबके मन की भावना, चाहत हो परिपूर्ण।
नये वर्ष परिजन मिलें, सुख-सम्पत सम्पूर्ण।।०८९२।।

सुख-शान्ती घर में रहे, विश्व-देश के बीच।
सबके बंजर स्वप्न को, नया वर्ष दे सींच।।०८९३।।

आतंकी, उग्री सभी, मुख्यधार में आयँ।
जीवन के भय, डर सभी, बीता कल हो जायँ।।०८९४।।

कल तक जो ना मिल सका, नये वर्ष हम पायँ।
तन-मन-धन से हीन सब, तन-मन-धन पा जायँ।।०८९५।।

रहे अधूरे स्वप्न जो, बीते वर्ष अनाम।
आने वाला वर्ष दे, उनको सुन्दर नाम।।०८९६।।

आरक्षण, तुष्टीकरण का हो अन्त विधान।
नव आचारी-संहिता सबकी बनें समान।।०८९७।।

भाषा हिन्दी राष्ट्र की, घोषित हो इस वर्ष।
भारत में अब भारती, का हो नव उत्कर्ष।।०८९८।।

नये वर्ष शुभकामना, तुमको आज विशेष।
वह सबकुछ तुमको मिले, जो पाना था शेष।।०८९९।।

स्वस्थ और सानन्द रह, परिजन-पुरजन संग।
जीवन में छाए रहें, इन्द्रधनुष के रंग।।०९००।।

है हितेश शुभकामना, तुमको मित्र अपार।
भरे रहें सुख-सम्पदा, से तव घर-भण्डार।।०९०१।।

हम सबको ही शुभ रहे, आने वाला वर्ष।
छूकर नव ऊँचाइयाँ, पाएँ नवउत्कर्ष।।०९०२।।

मित्र बनें नववर्ष में, विश्वासी विद्वान।
मूर्ख, अविश्वासी, कुटिल दूर करें भगवान।।०९०३।।

कोहरे में लिपटा हुआ, बीत रहा गतवर्ष।
सुखद-सुनहरी धूप ले- आय गया नववर्ष।।०९०४।।

सदा भयंकर गलतियाँ, लेते अनुभव मान।
करते हैं हम अहम् का, यों अपने सम्मान।।०९०५।।

कलयुग का होने लगा, अब भरपूर प्रभाव।
श्रद्धा, भक्ती, समर्पण, सबका आज अभाव।।०९०६।।

निष्ठा औ' कर्त्तव्य को, भूल गए हैं लोग।
दुष्कर्मों में लिप्त सब, झेल रहे हैं रोग।।०९०७।।

खुला वक्ष ले घूमती, नारी लज्जाहीन।
नाममात्र के वस्त्र ही, पहने वधू कुलीन।।०९०८।।

मात्र औपचारिक हुए, अब सारे सम्बन्ध।
मात-पिता-भाई-बहन पति-पत्नी अनुबन्ध।।०९०९।।

मधुमासी मौसम हुआ, व्यापे अंग-अनंग।
सुन मितवा बजने लगे, कानों बीच मृदंग।।०९१०।।

जीवन बना इकादशी, करे नित्य उपवास।
पूरनमासी आय तो, मिले धरा-आकास।।०९११।।

बाट निहारे भामिनी, कब आएँगे कन्त।
अंग-अंग सहला रहा, मादक मुदित बसन्त।।०९१२।।

बिहँसे पुष्प गुलाब के, महक उठा मधुमास।
खिली कमलिनी ताल में, भ्रमर मिलन की आस।।०९१३।।

श्रम से ही जीवन बने, श्रम से बने महान।
श्रम से ही अति मूर्ख भी, बन जाता विद्वान।।०९१४।।

पाना है गंतव्य, हो, दृढ़ निश्चय मंतव्य।
मिले सफलता कर्म-श्रम, का हो सामंजस्य।।०९१५।।

श्रम से रेखा भाग्य की, बन जाती वरदान।
होता है आलस्य में, जीवन का अपमान।।०९१६।।

कठिन तपस्या जानिए, श्रम का ही पर्याय।
पूर्ण सफलता का यही, सबसे श्रेष्ठ उपाय।।०९१७।।

जहाँ-जहाँ पुरुषार्थ है, वहाँ-वहाँ उत्थान।
सदा झेलता कापुरुष, जीवन का अवसान।।०९१८।।

निष्ठा होनी चाहिए, तभी सफल हो साध।
लक्ष्य प्राप्त करता वही, जो गतिशील अबाध।।०९१९।।

इस धरती पर कापुरुष, सहता है अपमान।
होता है पुरुषार्थ का, जनगण में गुनगान।।०९२०।।

पुरुषारथ के सामने, झुका सिकन्दर ग्रेट।
कायर ने संधी करी दे शत्रु को भेंट।।०९२१।।

माना भाग्य विशेष है, हर उन्नति का मूल।
किन्तु कर्म भी श्रेष्ठ हो, तब हो फल अनुकूल।।०९२२।।

भाग्य कर्म दोनों मिले, तब हो लाभ विशेष।
कर्महीन नर भोगता, बैठा-बैठा क्लेश।।०९२३।।

भाग्यवान रावण बली, मिली स्वर्ण की लंक।
किन्तु किये दुष्कर्म तो, लगा भाग्य में डंक।।०९२४।।

भाग्य-भाग्य कहता रहे, कर्म करे कछु नाहि।
मझधारा में नाव हो, डूबे जल के माँहि।।०९२५।।

भाग्य कर्म का साथ हो, रहे न लक्ष्य अशेष।
जीवन रथ के यही दो, पहिये मित्र हितेश।।०९२६।।

भाग्य भरोसे बैठकर, नाव न उतरे पार।
नाव तिराते कर्म से, चप्पू औ' पतवार।।०९२७।।

कर्म तभी होता सफल, भाग्य रहे जब साथ।
शुद्ध सफलता के लिए, यह दोनों जस हाथ।।०९२८।।

गीता में श्रीकृष्ण ने, बोला कर्म प्रधान।
कर्म हमारे ज्ञान में, भाग्य से हम अज्ञान।।०९२९।।

मित्र नहीं शत्रु बने, रहे पूर्ण विश्वास।
शत्रु से हो मित्रता, ऐसा करें प्रयास।।०९३०।।

सुनी सुनाई बात का, मित्र यही है सार।
उस पर तब विश्वास कर, जब हो कुछ आधार।।०९३१।।

कभी-कभी करती भ्रमित, आँखों देखी बात।
जब तक इस संदर्भ का, छोर न हो कुछ ज्ञात।।०९३२।।

पति-पत्नी संबंध में, अगर नहीं विश्वास।
तब ऐसा संबंध है, जैसे सूखी घास।।०९३३।।

संन्यासी बनकर करे, जो कोई व्यापार।
लोभ, मोह, मद्, क्रोध से, वह जाता है हार।।०९३४।।

मिले शीघ्र सस्ता, सुलभ, तब कहलाता न्याय।
महँगा और विलम्ब से, मिले बने अन्याय।।०९३५।।

असफलता से खीजकर, छोड़ न मन की आस।
निश्चित देगा सफलता, बारम्बार प्रयास।।०९३६।।

सूर्पणखाएँ घूमतीं नग्न उघाड़े वक्ष।
मर्यादाएँ त्याग कर, सभी कार्य में दक्ष।।०९३७।।

अगिन ताड़काएँ हुईं, नगर-नगर चैतन्य।
सभी आचरण आवरण, त्याग हो रहीं धन्य।।०९३८।।

बचपन से सिखलाइए, सुत को सद्व्यवहार।
यदि चाहें सुत आपका, जीते सब संसार।।०९३९।।

जितना भी कटु सत्य हो, हरे अन्ततः ताप।
झूठ भले मीठा लगे, पर देता सन्ताप।।०९४०।।

साँई के दरबार में, सबका है कल्याण।
ईसा, मूसा, सिक्ख औ' हिन्दू एक समान।।०९४१।।

निजनारी को छोड़कर, परनारी से रास।
दल-बदलू नेताओं के, मुखरे हुए उजास।।०९४२।।

मृदुभाषी हो शत्रु तो, बात सुनो धर ध्यान।
कर्ण कुटिल निजमित्र की, बात न दीजै कान।।०९४३।।

पुनः अवतरित हो गए, रावण औ' मारीच।
शायद हो फिर योजना, सियाहरण की नीच।।०९४४।।

गद्दारों की हो रही, संख्या में अभिवृद्धि।
और ब़ढ़ रही कपटियों-कुटिलों की गणवृद्धि।।०९४५।।

पुरुषों की मनमानियाँ, हुई पूर्ण स्वच्छन्द।
घर के बाहर ढूँढ़ते, सुख-शान्ती मतिमन्द।।०९४६।।

सत्कर्मों पर हो रहे, हावी अब दुष्कर्म।
श्रेयस्कर अब नहीं है, मरना हित निजधर्म।।०९४७।।

नहीं मिल रहे राम को, मित्र सखा सुग्रीव।
अब मैत्री सम्बन्ध भी, दीख रहे निर्जीव।।०९४८।।

हो जाये श्रीराम का, रामराज पुनि आज।
खर-दूषण नेताओं से अब है दुखी समाज।।०९४९।।

केवल पुस्तक में लिखा, सत्य न मान हितेश।
परख कसौटी पर उसे, पुनि-पुनि जाँच विशेष।।०९५०।।

मात्र किताबी ज्ञान ही, उत्तम नहीं सुजान।
करे श्रेष्ठता की प्रथम, अनुभव से पहचान।।०९५१।।

भूल न पाएगा जगत, मेरे अंकित लेख।
उखड़ न पाएगी सृजन, की मम गाढ़ी मेख।।०९५२।।

आज मील पत्थर बना, रचित लिखित मम काव्य।
परमात्मा की कृपा बिन था कब यह सम्भाव्य।।०९५३।।

लिखी समय के भाल पर, सदा समय की बात।
लिखा नहीं शृंगार पर, रहा तभी अज्ञात।।०९५४।।

साकी, मदिरा सुन्दरी, पर लिखता यदि सार।
विरह वियोगी गीत से, मिलता खूब प्रचार।।०९५५।।

वही लिखा जो भी दिखा, घटित जगत के बीच।
अस्वाभाविक व्यर्थ में चित्र सका ना खींच।।०९५६।।

ईश्वर वायू भाग्य को, देख न पाया कोय।
पर इनके अस्तित्व पर अविश्वास ना होय।।०९५७।।

लता वृक्ष में, फूल में, विद्यमान है जीव।
सुख-दुख भी यह भोगते, सुनो सखा सुग्रीव।।०९५८।।

पशु-पक्षी सब दुखी हैं, रहे न जब से वृक्ष।
कहाँ बनाए घोंसला, हो वर्षा में रक्ष।।०९५९।।

देख-रेख सौंपी गई, जिनें बने वह चोर।
नहीं नाचते दीखते, अब जंगल में मोर।।०९६०।।

दुखी हुआ मन आपना, जब-जब व्यापा क्रोध।
भले-बुरे का क्यों नहीं, रहता है फिर बोध।।०९६१।।

बच्चे माँगें प्यार जब, मिले उन्हें दुत्कार।
क्यों होता यह किसलिए, इस पर करो विचार।।०९६२।।

अपने मन में झाँकिए, क्यों हो जाता दुष्ट।
अपनों से हम किसलिए, हो जाते हैं रुष्ट।।०९६३।।

बच्चों को यदि प्यार से, समझाओगे बात।
संग साथ में तुम्हें भी, हर्ष होयगा तात।।०९६४।।

बच्चा रोया, किसलिए हुआ कुपित तव गात।
वह किससे निज दुख कहे, बोले मन की बात।।०९६५।।

देखें अनदेखा करे, कब तक यह सरकार।
सम्मानित इक दिवस तो, करेगा यह संसार।।०९६६।।

ऋतूराज आगमन से, हुआ प्रफुल्लित गात।
चाँदी जैसे दिन हुए, मधुर चन्द्रिका रात।।०९६७।।

पिक् बोला मैना सुनो, चलो करें अभिसार।
नव पल्लव तरुवर खिले, महका हरसिंगार।।०९६८।।

मधुमासी मौसम हुआ, व्यापा अंग-अनंग।
नवपल्लव तरु झूमते, पुरवाई के संग।।०९६९।।

वातायन में व्याप्त है, मादकता चहुँओर।
पशु-पक्षी मन मुदित हैं, नाच रहे हैं मोर।।०९७०।।

बिहँसे वृक्ष पलाश के, खिले पुष्प हर डाल।
लगा कि जैसे धरा के, केश हो गए लाल।।०९७१।।

आम वृक्ष बौरा रहे, मादक हुआ बसन्त।
प्रिय को लगे निहारने, अब सकाम हो कन्त।।०९७२।।

ताक रही है कनखियो से मुग्धा चितचोर।
तब देगी संकेत जब, देखेंगे इस ओर।।०९७३।।

ठिठुरन भागी शीत की, हुआ प्रफुल्लित गात।
पोर-पोर को छू रही, मौसम की सौगात।।०९७४।।

रामराज की कल्पना हो न सकी साकार।
हम अभाग्यवश स्वप्न को, दे न सके आकार।।०९७५।।

अग्नि परीक्षा बाद भी, जमा न जब विश्वास।
चली गई सिय मात फिर, धरती माँ के पास।।०९७६।।

रामनाम की ओढ़कर चादर आज हितेश।
अनगिन रावण घूमते, धर साधू का वेश।।०९७७।।

बिना ढके निज वक्ष को, जीन्स पहनकर आज।
अल्प वस्त्र में घूमतीं, सूर्पनखा तज लाज।।०९७८।।

हुआ आज कौमार्य भी, कन्या का अपवाद।
भूले नारी-पुरुष सब, अब निज-निज मर्याद।।०९७९।।

कैकेयी कारण हुआ, राक्षस कुल अवसान।
दोष वही देते उसे, जिनें नहीं है ज्ञान।।०९८०।।

राम न तजते अयोध्या जाते ना वनवास।
तब कैसे होता कहो, निश्चर वंश विनाश।।०९८१।।

रामनाम के मंत्र से, मिटे रोग-दुख-शोक।
भजो अयोध्यानाथ को जो चाहो सुरलोक।।०९८२।।

शरणागत क्षणमात्र में पा जाता है राज।
राम कृपा से प्राप्त हों, सिंहासन औ' ताज।।०९८३।।

रामभक्त पर जब कभी, संकट पड़े सुजान।
उसकी तुरत सहायता, करते हैं हनुमान।।०९८४।।

मारुतसुत को प्रिय वही, जिसके प्रिय श्रीराम।
शान्ती-सम्पदा-सुख उसे, मिले मित्र अविराम।।०९८५।।

भरत, शत्रुघ्न, लखन सम भ्रात राम से चार।
तब घर-घर के बीच में, उठे नहीं दीवार।।०९८६।।

राम एक आदर्श हैं, मर्यादा के रूप।
सुचरित्र-उज्जवल-विमल जैसे उजली धूप।।०९८७।।

पिता वचन पालन किया, पा माँ-मन आभास।
राक्षस कुल के नाश को, राम गए वनवास।।०९८८।।

पापकर्म जब बढ़ गए, चहुँदिशि अत्याचार।
जनजीवन कल्याण को, हुआ राम अवतार।।०९८९।।

पुनः परिस्थिति वही है, पुनः बढ़े दुष्कर्म।
कृष्ण पुनः अवतरित हों, प्रतिपादित हो धर्म।।०९९०।।

चाटुकार साहित्य में, बनकर देख हितेश।
मिले पद्मश्री साथ में, हो सम्मान विशेष।।०९९१।।

जिसकी लाठी पुज रही, उसकी ही जय बोल।
कलयुग के दरबार में, तभी लगेगा मोल।।०९९२।।

क्या लेगा सच बोलकर, राजा के दरबार।
घोटालों का कर रहे, जहाँ सभी व्यापार।।०९९३।।

अहंकार में डूबकर, गर्दन चले तनाय।
एक दिवस यह गिरेंगे, निश्चित ठोकर खाय।।०९९४।।

जैसा चाहे जगत से, अपने प्रति व्यवहार।
वैसा ही रख जगत से, तू भी समव्यवहार।।०९९५।।

ईश्वर ने ही रचा है, जड़-चेतन हर तत्त्व।
केवल मूर्ख न मानते, ईश्वर का अस्तित्व।।०९९६।।

पति-पत्नी सम्बन्ध में, तब आता गतिरोध।
जबकि मध्य में अन्य का, होय उपस्थिति बोध ।।०९९७।।

स्नेह और सम्मान में, जब हो खीचातान।
आपस में कटुता बढ़े, दुखी होय सन्तान।।०९९८।।

पति-पत्नी सम्बन्ध की, तभी सफलता जान।
घर में जब सुख-शांति हो, श्रेष्ठ बने संतान।।०९९९।।

चाटुकार के सामने, हुई सत्य की हार।
जबसे मिला असत्य को, मान राज दरबार।।१०००।।

थका-थका सा मन हुआ, व्याकुल और अधीर।
भारी-भारी सी लगे, छोटी-छोटी पीर।।१००१।।

❑❑

उपसंहार

नये वर्ष के साथ में, आया शुभ गणतन्त्र।
साथ-साथ ही बज उठा, ढोल चुनावी यन्त्र।।

जनता के हित के लिए, जनता की सरकार।
जनता द्वारा गठित हो, था इतना सुविचार।।

कहो सत्य कितना हुआ, प्रजातन्त्र का स्वप्न।
जिसके कारण हुए थे, हिंस-अहिंसक यत्न।।

हुए देशहित जिस लिए, अनगिन भक्त शहीद।
पूरी कितनी हो सकी, उन सबकी उम्मीद।।

जिस स्वराज्य हित, दिए थे जनता ने बलिदान।
उनके सपनो सा बना, क्या यह हिन्दुस्तान।।

दूर हुई क्या भुखमरी, या निर्धनता मित्र।
पहले से सँवरा हुआ, क्या है देश चरित्र।।

न्याय सुलभ सस्ता हुआ, बोलो क्या उपलब्ध।
क्या अब भी हम मानते, दोषी है प्रारब्ध।।

जो भी नेता लड़ रहे, हैं इस समय चुनाव।
क्या निष्ठा का नहीं है, उनमें मित्र अभाव।।

न्याय सुलभ सस्ता नहीं, अगर शीघ्र ना होय।
लड़ते-लड़ते मुकदमा प्राण दोउ जन खोय।।

कहो पड़ोसी देश से कैसे हैं सम्बन्ध।
विश्व-पटल पर हो रहे, हैं कैसे अनुबन्ध।।

प्रजातंत्र है देश में या परिवारिक तंत्र।
परिभाषित कैसे हुआ, भारत में गणतंत्र।।

उग्रवाद है क्या अभी, व्याप्त देश के बीच।
क्या हमलावर हैं अभी, आतंकी अति नीच।।

नक्सलवादी बन रहे, क्या अपनों का काल।
बिछा हुआ है देश में, क्या दुष्टों का जाल।।

क्या महँगाई पर लगी, बोलो कोई रोक।
सुधरा है क्या देश में, निर्धन का इहलोक।।

दूर अशिक्षा हो सके, क्या कुछ हुए प्रयास।
अंधकार के बीच में, कितना हुआ प्रकास।।

कदम उठाए क्या कहो, सबै मिले व्यवसाय।
बेरुजगारी दूर हो, कितने किए उपाय।।

जनसंख्या अनुपात में साधन, यातायात।
बढ़ा दिए हैं या नहीं कुछ तो बोलो तात।।

जनसेवक क्या कर रहे, इसकी भी सुध लेब।
जन विकास में लिप्त हैं, या भरते हैं जेब।।

इतना कहकर प्रभू ने, लिया तनिक विश्राम।
नारद के मुख से तभी निकला हे श्रीराम।।

भरतभूमि पर व्याप्त है, पूरा भ्रष्टाचार।
घोटालों में लिप्त हैं, जनसेवक सरकार।।

अपराधी भी जेल से, लड़ता यहाँ चुनाव।
अपहर्ता, दुष्कर्मियों का भी नहीं अभाव।।

भूख, अशिक्षा, गरीबी, व्याप्त यहाँ है नाथ।
सब अपनी सी हाँकते, जिनके लाठी हाथ।।

सत्ता, स्वारथ के लिए, निष्ठा बदलें लोग।
दलदल में दलबदल की ढूँढ रहे संयोग।।

आतंकी का कर रहे, अतिथी-सा सत्कार।
अबलाओं पर हो रहे, नित नव अत्याचार।।

धर्म लुप्त हो रहा अब, है अधर्म सरनाम।
धर्म स्थापनार्थाय, प्रगटो हे श्रीराम।।

जनसेवक अब बन रहे, जनता के सिरमौर।
खुद को कहते शाह औ' कहते जनता चोर।।

गद्दारों ने देश को, जकड़ा है चहुँओर।
शीघ्र अवतरित हो प्रभू, दो भारत को भोर।।

शुभ होगा गणतन्त्र तब, शुभ होगा नववर्ष।
जब होगा हर क्षेत्र में, जन-गण-मन उत्कर्ष।।

❑❑

लेखक परिचय

1. **नाम**– हितेश कुमार शर्मा
2. **पिता का नाम**– डॉ. आर.पी. शर्मा
3. **माता का नाम**– स्व. श्रीमती रामसुमरनी शर्मा
4. **शिक्षा**– बी.काम., एल.एल.बी (एडवोकेट)
5. **पत्नी का नाम**– श्रीमती ऊषा शर्मा
6. **पुत्रगण**– तपेश शर्मा अधिवक्ता, ललित शर्मा अधिवक्ता, आशुतोष शर्मा प्राकृतिक चिकित्सक एवं व्यवसाय तथा विदुर भारद्वाज, कमाण्डेन्ट सी0सु0ब0
7. **जन्म तिथि** –30 दिसम्बर सन 1936
8. **प्रका□न**– स्वरचित कविताओं के 13 संकलन प्रकाशित तथा सामूहिक 12 काव्य संकलन संपादित व्यंग्य पुस्तक **हम आज़ाद हैं;** समसामयिक लेख **जनता जाग्रत हो** तथा लघु पुस्तिकाएँ **महँगाई की मार** व **खामोश सरकार सो रहे हैं** तथा हमारी **न्यायिक व्यवस्था, भ्रष्टाचार कहाँ है, प्रजातंत्र कहाँ है। यंक्ष प्रश्न (प्रलय चार वर्ष बाद क्यों)** तीन शोध–पत्र स्वीकृत एवं प्रकाशित।
9. **संपादन**–1. भा0वि0क0 सहयोगी 2. ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय समाचार 3. कर एवं व्यापार 4. हितैषी
10. **व्यापार कर कानून** पर 11 पुस्तकें लिखीं।
11. **वि□श सम्मान**–1. ए.बी.आई. यू.एस.ए.द्वारा **मैन ऑफ दी इयर 2000** की उपाधि 2. इन्टरनेशनल नैचरोपैथी इन्सटीट्यूट

द्वारा **डाक्टर** की उपाधि 3. रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय मण्डल 3100 के **गवर्नर** (98–99)

12. साहित्यिक सम्मान–भिन्न–भिन्न संस्थाओं द्वारा अब तक 156 सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

सम्पर्क– गणपति भवन,सिविल लाइन्स, बिजनौर–246701(उ0प्र0)
फोन.–01342–262085 मो0–9319935979
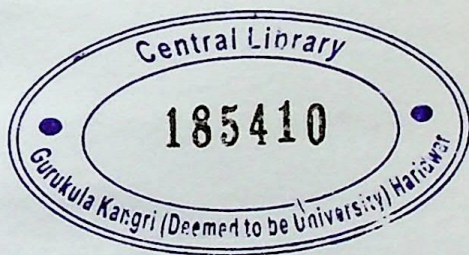
हितहजारिका

उषा शर्मा

बारहदरी काव्य संकलन के प्रकाशन के उपरान्त तीन लघु पुस्तिकायें लिखी व प्रकाशित कर दीं। दोहा संकलन आपके सामने है। अत्र-तत्र जनतंत्र भूमिका लिखने के लिए गया हुआ है। त्र्यम्बकम् (तेहरवां काव्य संकलन) प्रकाशन की प्रक्रिया में है। काव्य माला हर माह प्रकाशित होती है। कहानियाँ भी कई समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं। वकालत का काम भी यथावत है। किस प्रकार और कैसे यह सबकुछ लिखने के लिए समय निकालते हैं। मुझे पता नहीं। किन्तु जब लिख लेते हैं तो मुझे दिखाते अवश्य हैं। बाईपास सर्जरी के बाद प्रोस्टेट का ऑप्रेशन भी हुआ है कमजोरी चेहरे से व शरीर से स्पष्ट है। शक्ति क्षीण हो रही है। फिर भी साहित्यिक भक्ति में कमी नहीं आयी है। आराम करने के लिए सभी कहते हैं किन्तु सम्भवतः आराम इनके लिए हराम है। सभी पूछते हैं ये किस वक्त लिखते हैं इसका उत्तर मेरे पास नहीं होता। मुझे इनके स्वास्थ की चिन्ता है इनके साहित्यिक स्वास्थ की चिन्ता है क्यों कि यह लिखे बगैर मानेंगे नहीं और आराम नहीं करेंगे तो दुर्बलता दूर नहीं होगी। कहते हैं कि इनका कोई लक्ष्य है जिसके पूर्ण होने पर लिखना कम कर देंगे। मुझे यह भी पता नहीं कि लक्ष्य क्या है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इनको तन-मन और बुद्धि से स्वस्थ रखे।

- उषा शर्मा